Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٦

(सूरः अल् मुम्ताहेना : 06)

अनुवाद : हे हमारे रब! हमें उन लोगोंके लिए आज़माइश न बना जिन्होंने कुफ़्र किया और हे हमारे रब हमें बख़्श दे निसन्देह तू कामिल ग़लबा वाला (और) साहिब-ए-हिक्मत है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-12

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

30 शाबान 1444 हिज्री कमरी, 23 अमान 1402 हिज्री शम्सी, 23 मार्च 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

बदक़िस्मत है वह जिसने अपने बूढ़े माँ बाप को पाया और फिर उनकी ख़िदमत करके जन्नत में दाख़िल न हो सका।

(394) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि एक शख़्स आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और निवेदन किया कि लोगों में से मेरे हुस्न-ए-सुलूक का कौन ज़्यादा अधिकारी है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तेरी माँ। फिर उसने पूछा फिर कौन? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तेरी माँ। उसने पूछा फिर कौन? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तेरी माँ। उसने चौथी बार पूछा। फिर कौन? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। माँ के बाद तेरा बाप तेरे हुस्न-ए-सुलूक का ज़्यादा मुस्तहिक़ है फिर दर्जा बदरजा क़रीबी रिश्तेदार।

(बुख़ारी, किताब अल् अदब, باب من احق الناس بحسن الصحبة ومسلم)

(395) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मिट्टी में मिले उसकी नाक मिट्टी में मिले उसकी नाक (ये अलफ़ाज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीन दफ़ा दोहराए) अर्थात ऐसा शख़्स काबिल-ए--मज़म्मत और बदक़िस्मत है लोगों ने अर्ज़ किया हुज़ूर कौन सा शख़्स? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह शख़्स जिसने अपने बूढ़े माँ बाप को पाया और फिर उनकी ख़िदमत करके जन्नत में दाख़िल न हो सका।

(मुस्लिम, किताब البرّ والصلة ،باب رغم انف مَن ادرك ابويه)

(بحواله حديقة الصالحين ،مصنفه مكرم ملك سيف الرحمن صاحب)

★ ★ ★

मैंने अपने पुर ज़ोर निशानों से दिखाया है और साफ़ साफ़ दिखाया है कि ज़िंदा बरकात और ज़िंदा निशानात सिर्फ़ इस्लाम के लिए हैं

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

देखो और ग़ौर से सुनो! ये सिर्फ़ इस्लाम ही है जो अपने अंदर बरकात रखता है और इन्सान को मायूस और न मुराद होने नहीं देता और इस का सबूत यह है कि मैं इस के बरकात और ज़िंदगी और सदाक़त के लिए नमूना के तौर पर खड़ा हूँ। कोई ईसाई नहीं जो यह दिखा सके कि इस का कोई ताल्लुक़ आसमान से है। वह निशानात जो ईमान के निशान हैं और मोमिन ईसाई के लिए मुक़र्रर हैं कि अगर पहाड़ को कहें तू जगह से टल जाए। अब पहाड़ तो पहाड़। कोई ईसाई नहीं जो एक उल्टी हुई जूती को सीधी कर दिखाए। परंतु मैंने अपने पुर ज़ोर निशानों से दिखाया है और साफ़ साफ़ दिखाया है कि ज़िंदा बरकात और ज़िंदा निशानात सिर्फ़ इस्लाम के लिए हैं। मैंने बेशुमार विज्ञापन दिए हैं और एक मर्तबा सोला हज़ार विज्ञापन प्रकाशित किए। अब उन लोगों के हाथ में अतिरिक्त इस के और कुछ नहीं कि झूठे मुक़द्दमात किए और क़तल के इल्ज़ाम दिए। और अपनी तरफ़ से हमारे ज़लील करने के मंसूबे गाँठे, परंतु अज़ीज़ ख़ुदा का बंदा ज़लील क्योंकर हो सकता है जिसमें उन लोगों ने हमारी ज़िल्लत चाही। इसी ज़िल्लत से हमारे लिए इज़्ज़त निकली। ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ (जुमा : 5) देखो, अगर क्लार्क का मुक़द्दमा न होता तो इबरा का इलहाम क्योंकर पूरा होता। जो मुक़द्दमा से भी पहले सैंकड़ों इन्सानों में शाय हो चुका था। यह इस्लाम ही है जिसके साथ चमत्कार और सबूत हैं। इस्लाम दूसरे चिराग़ का मुहताज नहीं, बल्कि ख़ुद ही चिराग़ है। और इस के सबूत ऐसे स्पष्ट, खुले खुले निशान हैं कि उनका नमूना किसी मज़हब में नहीं। उद्देश्य इस्लाम की कोई तालीम ऐसी न होगी जिसका नमूना मौजूद न हो।

(मल्-फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 454 प्रकाशन कादियान 2018)

★ ★ ★

सब गुनाह वास्तव में शिर्क ही की शाख़ें हैं

गुनाह करने वाला इन्सान इसी लिए गुनाह में मुबतला होता है कि वह ख़ुदा तआला की ज़ात और सिफ़ात पर कामिल ईमान और तवक्कुल नहीं रखता

तौहीद का मसला नेकियों के लिए बतौर एक बीज के है, समस्त मज़ाहिब और समस्त अख़लाक़ इसी मर्कज़ के गर्द चक्कर लगाते हैं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः बनीइसराईल की आयत नंबर : 24 وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۭ اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا अनुवाद : तेरे रब ने (इस बात का ताकीदी हुक्म दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो और (तथा अपने) माँ बाप से अच्छा सुलूक करने का। अगर उनमें से किसी एक पर या इन दोनों पर जब कि वे तेरे पास हूँ बुढ़ापा आ जाए तो उन्हें उनकी किसी बात पर नापसंदीदगी का इज़हार करते हुए उफ़ तक न कह और न उन्हें झिड़क और उनसे (शरीफ़ाना तौर पर) नरमी से बात कर की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

क़ुरआन ने सबसे मुक़द्दम हुक्म तौहीद के क़ियाम और शिर्क के रद्द का दिया है। जब दुनिया में हुकूमतें मिलती हैं तो साथ ही अंधविश्वास और शिर्क भी पैदा हो जाते हैं। इस लिए जहां प्रगति की भविष्यवाणियाँ की वहां आइंदा के ख़तरात से भी बचने का हुक्म दिया और उनसे आगाह कर दिया। तौहीद को इस लिए मुक़द्दम रखा है क्योंकि कोई गुनाह बग़ैर शिर्क के पैदा नहीं होता।

मेरे नज़दीक सब गुनाह दरअसल शिर्क ही की शाख़ें हैं। गुनाह का मुर्तक़िब इन्सान इसी लिए गुनाह में मुबतला होता है कि वह ख़ुदा तआला की ज़ात और सिफ़ात पर कामिल ईमान और तवक्कुल नहीं रखता। तौहीद का मसला नेकियों के लिए बतौर एक बीज के है। समस्त मज़ाहिब और समस्त अख़लाक़ इसी मर्कज़ के गिर्द चक्कर लगाते हैं। अगर तौहीद का अक़ीदा न इख़्तेयार किया जाए तो क़ानून-ए-क़ुदरत और क़ानून शरीयत दोनों की बुनियाद हिल जाती है क़ानून-ए-शरीयत का ताल्लुक़ तो वाज़िह ही है। परंतु क़ानून-ए-क़ुदरत की समस्त प्रगतियाँ और साईंस की तमाम-तर बुनियाद भी तौहीद पर ही है। क्योंकि अगर मुख़्तलिफ़ ख़ुदा माने जाएं तो उनके मुख़्तलिफ़ क़ानून होने चाहिऐं या फिर कम से कम इस में मुख़्तलिफ़ तबदीलियां होती रहनी चाहिऐं। और अगर ऐसा हो अर्थात एक अटल क़ानून और एक क़ायम सिलसिला क़ानून-ए-क़ुदरत का दुनिया में जारी न हो, तो समस्त इलमी प्रगतियाँ तुरंत बंद हो जाएँगी क्योंकि साईंस की तरक़्क़ी और ईजादात की वुसअत

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

"आसमान के नीचे सिर्फ एक ही किताब है जो इस महबूब हक़ीक़ी का चेहरा दिखलाती है अर्थात क़ुरआन शरीफ़।" (हज़रत मसीह मौऊद)

अगर मुस्लमान ज़माने के इमाम को मान लें और कुरान-ए-करीम की तालीम को समझते हुए इस पर अमल करें तो ग़ैर मुस्लिमों को कभी इस तरह क़ुरआन-ए-करीम की तौहीन का साहस न हो

लोग सवाल करते हैं कि ख़ुदा को अगले जहान में देखना है तो किस तरह देखेंगे? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं क़ुरआन-ए--करीम की तालीम पर अमल करो तो उसी जहान में ख़ुदा को देख लोगे

"वह ख़ुदा जो समस्त दुनिया पर गुप्त है वह महज़ क़ुरआन शरीफ़ के ज़रीया से दिखाई देता है।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

क़ुरआन शरीफ़ एक ऐसी हिदायत है कि इस पर अमल करने वाला आला दर्जा के कमालात हासिल कर लेता है और ख़ुदा तआला से इस का एक सच्चा ताल्लुक़ पैदा होने लगता है

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया में ऐसी मिसालें हैं कि ग़ैर मज़हब बल्कि ला मज़हब और ख़ुदा को न मानने वालों को भी ख़ुदा के वजूद का यक़ीन दिलाया गया। अकली दलायल दिए गए और फिर जब निशान दिखाए गए और वाक़ियात बयान किए गए तो उन्होंने मज़हब को भी माना और इस्लाम को भी माना। यहां मग़रिब में भी ऐसे लोग हैं

"इस में एक ज़बरदस्त ताक़त है जो अपने पैरवी करने वालों को ज़न्नी मार्फ़त से यक़ीनी मार्फ़त तक पहुंचा देती है।" (हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम)

"ग़रज़ क़ुरआन शरीफ़ की ज़बरदस्त ताक़तों में से एक यह ताक़त है कि इस की पैरवी करने वाले को मोजज़ात और ख़वारिक़ दिए जाते हैं और वह इस कसरत से होते हैं कि दुनिया उनका मुक़ाबला नहीं कर सकती।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुर मआरिफ़ इर्शादात की रोशनी में क़ुरआन-ए-करीम के फ़ज़ायल, मुक़ाम-ओ-मर्तबा और अज़मत के बारे में ईमान अफ़रोज़ वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक10 फ़रवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

इससे पहेल का भाग अंक 10-11 में है

यह मुत्तक़ी की तारीफ़ है फिर क़ुरआन बतौर दीन होने के बारे में आप अलैहि-स्सलाम फ़रमाते हैं कि "यह अमर साबित शूदा है कि क़ुरआन शरीफ़ ने दीन के कामिल करने का हक़ अदा कर दिया है जैसा कि वह ख़ुद फ़रमाता है। اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (अल् मायदा : 4) अर्थात आज मैंने तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए कामिल कर दिया है और अपनी नेअमत तुम पर पूरी कर दी है और मैं इस्लाम को तुम्हारा दीन चुन करके ख़ुश हुआ। अतः क़ुरआन शरीफ़ के बाद किसी किताब को क़दम रखने की जगह नहीं क्योंकि जिस क़दर इन्सान की हाजत थी वह सब कुछ क़ुरआन शरीफ़ वर्णन कर चुका अब केवल मुकालमात-ए-इलाही का दरवाज़ा खुला है और वह भी ख़ुद बख़ुद नहीं बल्कि सच्चे और पाक मुकालमात जो सरीह और खुले तौर पर नुसरत-ए-इला-ही का रंग अपने अंदर रखते हैं और बहुत से उमूर ग़ैबिया पर मुश्तमिल होते हैं वह बाद तज़किया नफ़्स महिज़ पैरवी कुरान-ए-शरीफ़ और इत्तिबा आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम से हासिल हैं।"

(चशमा-ए-मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 80)

अफ़सोस कि हमारे मुख़ालेफ़ीन यह मार्फ़त की बातें सुनना नहीं चाहते और हम पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हमने क़ुरआन-ए-करीम में फैर बदल कर दी। क़ुरआन-ए-करीम के बतौर तिब्ब-ए-रुहा-नी के बारे में

आप अलैहिस्सलाम अपनी तसनीफ़ चशमा मार्फ़त में फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ एक ऐसी पुर हिकमत किताब है जिसने तिब्ब-ए-रुहानी के क़वायद-ए--कुल्लिया को अर्थात दीन के उसूल को जो दरअसल तिब्ब-ए-रुहानी है तिब्ब-ए--जस्मानी के क़वायद कुल्लिया के साथ समानता दी है।" इस के मुताबिक़ ठहराया है। "और यह समानता एक ऐसी लतीफ़ है जो कई सौ मआरिफ़ और हक़ायक़ के खुलने का दरवाज़ा है और सच्ची और कामिल तफ़सीर क़ुरआन शरीफ़ की वही शख़्स कर सकता है जो तिब्ब-ए-जस्मानी के क़वायद कुल्लिया पेश-ए-नज़र रख कर क़ुरआन शरीफ़ के वर्णन करदा क़वायद में नज़र डालता है। "फ़रमाया कि "एक दफ़ा मुझे बाअज़ मुहक़्क़िक़ और हाज़िक़ तबीबों की बाअज़ किताबें कशफ़ी रंग में दिखलाई गईं।" अल्लाह तआला ने ख़ुद राहनुमाई फ़रमाई। बाअज़ तबीबों की कशफ़ी रंग में किताबें दिखलाई गईं "जो तिब्ब-ए-जस्मानी के क़वायद कुल्लिया और उसूल इलमिया और सत्ता ज़रुरिया इत्यादि की बेहस पर मुश्तमिल और मुतज़म्मिन थीं।" इस विषय में थीं" जिनमें तिब्ब हाज़िक़ क़ुरशी की किताब भी थी।" उनमें से एक किताब क़ुरशी जो हकीम हैं उनकी भी थी" और इशारा किया गया कि यही तफ़सीर क़ुरआन है इस से मालूम हुआ कि शरीर का ज्ञान और संसार के ज्ञान में निहायत गहरे और अमीक़ ताल्लुक़ात हैं और एक दूसरे के मुसद्दिक़ हैं और जब मैंने उन किताबों को पेश-ए-नज़र रखकर जो तिब्ब-ए- जस्मानी की किताबें थीं कुरान--ए-शरीफ़ पर नज़र डाली तो वह अमीक़ दर अमीक़ तिब्ब-ए-जिस्मानी के पूर्णतः क़वायद की बातें निहायत बलीग़ पैराया में क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद पाईं।"

(चश्म-ए-मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 102-103)

अर्थात जस्मानी और रुहानी ईलाज के लिए भी क़ुरआन-ए-करीम से ही सही मदद मिलती है और इस में ग़ौर करने के लिए, मार्फ़त हासिल करने के लिए ज़माने

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"क़ुदरत और रहमत और क़ुरबत का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान का निशान तुझे अता होता है और फ़तह और ज़फ़र की किलीद तुझे मिलती है। हे मुज़फ़्फ़र तुझ पर सलाम"

"तुझे बशारत हो कि एक वजीह और पाक लड़का तुझे दिया जाएगा। एक ज़की ग़ुलाम (लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़कातेरे ही तुख़्म से तेरी ही ज़ुररियत नसल होगा"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो इलम और इर्फ़ान अता फ़रमाया था उस का कोई बड़े से बड़ा आलिम भी मुक़ाबला नहीं कर सकता था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु का दिया हुआ लिटरेचर एक जमाती ख़ज़ाना है।

आप रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ताबात, खिताबात, मज़ामीन अक्सर शाय हो चुके हैं। कुछ हो रहे हैं। उन्हें पढ़ना चाहिए

इस बेटे के अल्लाह तआला की तरफ़ से उलूम ज़ाहिरी-ओ-बातिनी से पर किए जाने, ज़हीन-ओ-फ़हीम होने और दूसरी ख़सूसीआत का हामिल होने के अपने भी और ग़ैर भी मोतरिफ़ हैं और ख़ूब जानते हैं और इस का एतराफ़ ग़ैरों ने खुल कर किया है

इस में संदेह नहीं कि क़ुरआन का अध्यन एक बिल्कुल नया ज़ावी-ए-फ़िक्र आपने पैदा किया है और यह तफ़सीर अपनी नौईयत के लिहाज़ से बिल्कुल पहली तफ़सीर है जिसमें अक़ल-ओ-नक़ल को बड़े हुस्न से हम-आहंग दिखाया गया है।

आपकी इलमी की विचार धारा, आपकी वुसअत-ए-नज़र, आपकी ग़ैरमामूली फ़िक्र-ओ-फ़िरासत, आपका हुस्न-ए-इस्तदलाल उसके एक-एक लफ़्ज़ से नुमायां है (अल्लामा नयाज़ फ़तहपूरी)

मिर्ज़ा महमूद की तफ़सीर के पाया की एक तफ़सीर भी किसी ज़बान में नहीं मिलती। आप जदीद तफ़सीरें भी मिस्र और शाम से मंगवा लीजिए और चंद माह बाद मुझ से बातें कीजिए (अख़तर ओरेनवी)

अहरारियों कान खोल कर सन लो तुम और तुम्हारे लगे बंधे मिर्ज़ा महमूद का मुक़ाबला क़यामत तक नहीं कर सकते। मिर्ज़ा महमूद के पास क़ुरआन का इलम है (मौलवी ज़फ़र अली ख़ान)

मैं दावा से कह सकता हूँ कि क्या मुस्लमान और क्या ग़ैर मुस्लमान बहुत थोड़े इतिहासकार हैं जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के समय के इख़तेलाफ़ात की तह तक पहुंच सके हैं और इस भयानक और पहली ख़ाना-जंगी की असली वजूहात को समझने में कामयाब हुए हैं।

हज़रत मिर्ज़ा साहिब को न सिर्फ ख़ाना-जंगी के अस्बाब समझने में कामयाबी हुई है बल्कि उन्होंने निहायत वाज़ेह और मुसलसल पैराए में इन वाक़ियात को वर्णन फ़रमाया है जिनकी वजह से ऐवान ख़िलाफ़त मुद्दत तक तज़लज़ुल में रहा।
(सय्यद अब्दुल क़ादिर साहिब एम.ए)

जो बातें भविष्यवाणी में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फ़रमाई थीं या कहना चाहिए कि अल्लाह तआला ने आप को बताई थीं वे हज़रत मिर्ज़ा बशीरुउद्दीन महमूद अहमद मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु में पूरी हुई

मुस्लेह मौऊद के दिन की मुनासबत से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के इलमी कारनामों का अजमाली वर्णन और हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हु के तर्जुमा-ओ-तफ़सीरुल क़ुरआन तथा कुछ लैक्चरज़ पर गैरों के विचार

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 फ़रवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

जैसा कि प्रत्येक अहमदी जानता है कि 20 फ़रवरी का दिन जमाअत में भविष्य-वाणी मुस्लेह मौऊद के हवाले से याद रखा जाता है और इस मुनासबत से जमाअतों में जलसे भी होते हैं। 20 फ़रवरी तो इस दफ़ा तीन दिन के बाद आना है लेकिन मैं ने मुनासिब समझा कि आज के ख़ुतबा में इस हवाले से कुछ करूँ।

"यह भविष्यवाणी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाँ एक लड़के की विलादत की थी जो बहुत सी ख़ूबियों का मालिक होगा। अल्लाह तआला की ख़ास ताईद-ओ-नुसरत उसे हासिल होगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात को, भविष्यवाणी को इस तरह बयान फ़रमाया है। फ़रमाया :

ख़ुदाए रहीम व करीम ने जो प्रत्येक चीज़ पर क़ादिर है जल्ला शानुहू व अ़ज्ज़ इस्मुहू - जिसकी शान प्रतापी है और उसका नाम इज्ज़त वाला है। मुझको अपने इलहाम (वाणी) से संबोधित करके फ़र्माया कि मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझसे मांगा। अत: मैंने तेरी वेदनओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) की जगह दी और तेरे सफ़र (होशियारपुर और लुधियाना) को तेरे लिये मुबारक कर दिया। अत: क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (निकटता) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान (कृपा व उपकार) का निशान दिया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की कुंजी तुझे मिलती है। ऐ मुज़फ्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वह जो क़बरों में दबे पड़े हैं बाहर आयें और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बर्कतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बुराईयों के साथ भाग जाये। अत: लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ

करता हूँ। अत: वे विश्वास कर लें कि मैं तेरे साथ हूँ और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्कार और तकज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाये। अत: तुझे खुश्खबरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जायेगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा। सुन्दर, पवित्र लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुकद्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह अशुद्धता से पवित्र है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आसमान से आता है। उसके साथ फ़ज़ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शिकोह (प्रतापी) और अज़मत (महान) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़स अर्थात्(मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात् एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जायेगा। वह तीन को चार करने वाला होगा (इसके अर्थ समझ में नहीं आए) दुशंब: (सोमवार) है मुबारक दुशन्ब: (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक श्रेष्ठ सुपुत्र)।

مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ ۔ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَالْعُلَاءِ كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ

मज़्हरूल् अव्वले वल् आख़िरि, मज़्हरूल् ह़क्क़े वल् अलाऐ कअन्नल्लाह नज़्ज़ल मिनस्समाइ

अर्थात् वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो सच है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वंय आकाश से उतर आया हो।

जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर। जिसको खूदा ने अपनी इच्छा के इत्र से सुगंधित किया है। हम उसमें अपनी आत्मा डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत(प्रसिद्ध) पाएगा और क़ौमें (जातियां) उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़सी नुक़ता आसमान अर्थात् ख़ुदा की तरफ ' وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۔ उठाया जायेगा। व काना अम्रम् मक़्ज़िय्या (और यह काम पूरा होकर रहने वाला है)।

(आईना कमालात इस्लाम,रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ : 647)

इसलिए इस भविष्यवाणी के मुताबिक़ इस मुद्दत के अंदर जो आप ने वर्णन फ़रमाई थी बेटा पैदा हुआ जिसका नाम हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद है जिन्हें अल्लाह तआला ने ख़लीफ़तुल मसीह सानी के मुक़ाम पर भी बिठाया। फिर एक लंबे अर्से बाद ख़लीफ़ा सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने अल्लाह तआला से सूचना पा कर यह ऐलान फ़रमाया कि जिस बेटे की मुस्लेह मौऊद होने की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़बर दी थी वह मैं ही हूँ।

इस बेटे का अल्लाह तआला की तरफ़ से उलूम ज़ाहिरी-ओ-बातेनी से परिपूर्ण किए जाने, ज़हीन-ओ-फ़हीम होने और दूसरी ख़सुसीआत के अपने भी और ग़ैर भी मोतरिफ़ हैं और ख़ूब जानते हैं और इस का एतराफ़ ग़ैरों ने खुल कर किया है

इस वक़्त मैं हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के इलमी और विभिन्न कारनामों में से बाअज़ का वर्णन पेश करूँगा

इन बातों के सुनने से पहले जो पेश करने लगा हूँ इस बात को सामने रखना चाहिए कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु का बचपन सेहत के लिहाज़ से निहायत कमज़ोरी में गुज़रा, बीमारी में गुज़रा। आँखों की तकलीफ़ इत्यादि भी रही। नज़र भी एक वक़्त में एक आँख से रही।

फिर दुनियावी तालीम के लिहाज़ से भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु की तालीम न होने के बराबर थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुद फ़रमाया कि मुश्किल से मेरी प्राइमरी तक तालीम है लेकिन अल्लाह तआला का वादा था आप रज़ियल्लाहु अन्हु को दी-नी-ओ-दुनयावी उलूम से पुर करने का इसलिए अल्लाह तआला ने ऐसे ऐसे ज़बरदस्त और अक़ल को दंग कर देने वाले खिताबात और ख़ुतबात आप रज़ियल्लाहु अन्हु से करवाए और ऐसे ऐसे मज़ामीन आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखे कि जो अपनी मिसाल आप हैं और ग़ैर भी उनके स्वीकारी हैं।

आज कुछ हवाले मैं पेश करूँगा। मैं ये हवाले पेश से पहले आप रज़ियल्लाहु अन्हु की तसनीफ़ात, तक़ारीर, मज़ामीन, ख़ुतबात और मजालिस-ए- इर्फ़ान इत्यादि की संख्या और हुजम का एक जायज़ प्रस्तुत करता हूँ। जो कुतुब, ख़ताबात, लैक्चरज़, मज़ामीन पैग़ामात इत्यादि की शक्ल में शाय हुए या अब तक़रीबन मुकम्मल हैं और वे जो तक़ारीर, खिताबात इत्यादि अनवारुल उलूम की शक्ल में शाय होने के लिए तैयार हैं। उनकी कुल (38) जिल्दें बन जाएँगी और उनकी संख्या चौदह सौ चौबीस (1424) है और इस के कुल पृष्ठ बीस हज़ार तीन सौ चालीस (20340) हैं। इतने हो जाऐंगे अंदाज़न। तफ़सीर-ए-कबीर, तफ़सीर-ए-सग़ीर समेत दीगर तफ़सीरी मवाद के सफ़हात अट्ठाईस हज़ार सात सौ पैंतीस (28735) हैं। 1808 ख़ुतबात जुमा हैं जिनके सफ़हात अठारह हज़ार सात सौ पाँच (18705)हैं। इक्कावन (51) ख़ुतबात-ए-ईद उलफ़ितर हैं जिनके सफ़हात पाँच सौ तीन (503) हैं। बयालिस (42) ख़ुतबात-ए-ईदुल अज़हा हैं जिनके सफ़हात चार-सौ पाँच (405) हैं। 150 ख़ुतबात-ए-निकाह हैं जिनके सफ़हात छः सौ चौरासी (684) हैं। खिताबात-ए-शूरा भाग प्रथम सोम भी शाय हुई है इस के सफ़हात दो हज़ार एक सौ इकत्तीस (2131) हैं ये सारे और जो मुख़्तलिफ़ और भी हैं इन पृष्ठों को इकट्ठा किया जाए, जमा किया जाए तो कुल तक़रीबन पचहत्तर हज़ार (75000) पृष्ठ बनते हैं। रिसर्च सेल ने अल्ह-कम और अल्फ़ज़ल के 1913 ई. से 1970 ई. तक के शुमारों को देखा है तो ये कहते हैं कि कुछ मज़ीद मवाद सामने आया है जो अभी तक अनवारुल उलूम या किसी किताब में शाय नहीं हो सका। इस तफ़सील के मुताबिक़ पचपन (55) मज़ामीन, सत्ताईस (27) तक़ारीर, एक सौ तैंतालीस (143) मजालिस-ए-इर्फ़ान, दो सौ बाईस (222) अनावीन मल्-फ़ूज़ात और एक सौ इकत्तीस (131) मकतूबात अभी तक मिल चुके हैं। एक बड़ा वसीअ इलमी ज़ख़ीरा है।

इस वक़्त मैं पहले आप रज़ियल्लाहु अन्हु के इलमी में से क़ुरआन-ए-करीम के अनुवाद-ओ-तफ़सीर के कुछ कवायफ़ और ग़ैरों के इस बारे में विचार तबसरे पेश करता हूँ। तफ़सीर-ए-कबीर में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसठ (59) सूरतों की तफ़सीर वर्णन फ़रमाई है जो कि दस जिल्दों और पाँच हज़ार नौ सौ सात (5907) पृष्ठों पर मुश्तमिल है। इस के इलावा बहुत से तफ़सीरी नोट भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु के मिले हैं जिनके सफ़हात की संख्या भी हज़ारों में है और उम्मीद है किसी वक़्त ये भी शाय हो जाएगी। बामुहावरा अनुवाद क़ुरआन का एक बहुत बड़ा काम आप रज़ियल्लाहु अन्हु का तफ़सीर-ए-सग़ीर की सूरत में है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की अपनी उम्र के आख़िरी दौर में सबसे बड़ी यह ख़ाहिश थी कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़िंदगी में आप रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़रीया पूरे कुरान-ए-मजीद का एक मयारी और बामहावरा ऊर्दू तर्जुमा संक्षिप्त परंतु जामा नोटों के शाय हो जाए।

सफ़र-ए-यूरोप 1955 ई. से वापसी के बाद जबकि हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो की तबीयत अक्सर ना-साज़ रहती थी परंतु अल्लाह तआला ने अपने ख़लीफ़ा मौऊद की रूहुल-क़ुदुस से ऐसी ज़बरदस्त ताईद फ़रमाई कि जून 1956 ई. में गरमियों में मरी के पहाड़ों पर गए तो वहां आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अनुवाद क़ुरआन इमला कराना शुरू किया जो ख़ुदा के फ़ज़ल से 25 अगस्त 1956 ई. की अस्र तक मुकम्मल हो गया और यह नख़ला एक जगह थी जो कलर कहार के क़रीब छोटा सा हवादार स्थान है वहां आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने छोटी सी एक बस्ती बनाई थी जहां यह काम किया। इस के बाद फिर उसकी नज़रसानी हुई। फिर नज़र सालिस हुई। किताबत हुई। प्रफ़ू रीडिंग इत्यादि हुई। इस के बहुत सारे काम हुए और तफ़सीर सग़ीर 15 नवंबर 1957 ई. को प्रकाशित हो कर मुकम्मल तैयार हो गई।

(उद्धृत तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 19 पृष्ठ 522 से 531)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने तफ़सीर-ए-सग़ीर के बारे में एक जगह फ़रमाया कि

"मेरी राय यह है कि इस वक़्त तक क़ुरआन-ए-करीम के जितने तर्जुमे हो चुके हैं उनमें से किसी तर्जुमा में भी उर्दू मुहावरे और अरबी मुहावरे का इतना ख़्याल नहीं रखा गया जितना इस में रखा गया है।"

आम तौर पर देखें और विशेषता उसके नोटिस में भी नज़र आ जाता है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने तर्जुमा में मुहावरे का ख़्याल रखा है। "यह महिज़ अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि उसने इतने थोड़े अरसा में ऐसा अज़ीमुश्शान काम सरअंजाम देने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा दी।" फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआला ने इस बुड्ढे और कमज़ोर इन्सान से वह अज़ीमुश्शान काम करवा लिया जो बड़े-बड़े ताक़तवर भी न कर सके।" फ़रमाते हैं "गुज़शता तेराह सौ साल में बड़े बड़े क़वी नौजवान गुज़रे हैं मगर जो काम अल्लाह तआला ने मुझे सरअंजाम देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई है

इस की उनमें से किसी को भी तौफ़ीक़ नहीं मिली। दरहक़ीक़त यह काम ख़ुदा का है और वह जिससे चाहता है करवा लेता है।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 19 पृष्ठ 525-526)

फिर एक और जगह आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : "अल्लाह तआला के फ़ज़ल-ओ-रहम से .. कुरान-ए-शरीफ़ का सारा तर्जुमा मुकम्मल हो गया। अर्थात اَلْحَمْدُ لِلّٰه से وَالنَّاس तक मा तफ़सीर-ए-सग़ीर के जिसके मुताल्लिक़ तफ़सीर कबीर से मुक़ाबला करने से यह पता लगा है कि कई मज़ामीन इख़तेसारन इस में ऐसे आए हैं कि तफ़सीर-ए-कबीर में भी नहीं।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 19 पृष्ठ 530)

फिर तफ़सीरुल क़ुरआन अंग्रेज़ी का भी एक अहम काम हुआ जिसे हम फाईव वालीयम कमैंटरी (Five Volume Commentary)कहते हैं। इस तफ़सीर के शुरू में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के क़लम से लिखा हुआ एक निहायत पुरमारफ़ दीबाचा भी शामिल है जिसमें दूसरे सहफ़ समावी की मौजूदगी में क़ुरआन--ए-मजीद की ज़रूरत और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हयात-ए--तय्यबा और जमाउल-क़ुरआन और क़ुरआनी तालीमात पर बिल्कुल अछूते और सुंदर पैराए में रोशनी डाली गई है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस दीबाचे के आख़िर में शुक्रिया और एतराफ़ के शीर्षक पर तहरीर फ़रमाया कि मैं इस दीबाचे के आख़िर में मौलवी शेर अली साहिब की इन बेनज़ीर ख़िदमात का एतराफ़ करना चाहता हूँ जो उन्होंने बावजूद सेहत की ख़राबी के क़ुरआन-ए-करीम को अंग्रेज़ी में तर्जुमा करने के मुताल्लिक़ की हैं। इसी तरह मुल्क ग़ुलाम फ़रीद साहिब, ख़ान बहादुर चौधरी अबुल हाशिम ख़ान साहब मरहूम और मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब भी शुक्रिया के मुस्तहिक़ हैं। उन्होंने अनुवाद पर तफ़सीरी नोट मेरी मुख़्तलिफ़ तक़रीरों और किताबों और दरसों का ख़ुलासा निकाल कर दर्ज किए हैं। फिर इस में आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह भी लिखा कि मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो का शागिर्द होने की वजह से कई मज़ामीन मेरी तफ़सीर में लाज़िमन ऐसे आए हैं जो मैं ने उन से सीखे। इसलिए इस तफ़सीर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तफ़सीर भी, हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि-यल्लाहु अन्हो की तफ़सीर भी और मेरी तफ़सीर भी आ जाएगी और चूँकि ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपनी रूह से अभिषेक कर के इन उलूम से परिपूर्ण फरमाया था जो इस ज़माने के लिए ज़रूरी हैं इसलिए मैं उम्मीद करता हूँ कि यह तफ़सीर बहुत से बीमारों को शिफ़ा देने का मूजिब होगी।

बहुत से अंधे उसके ज़रीया से आँखें पाएँगे। बहरे सुनने लग जाऐंगे। गूँगे बोलने लग जाऐंगे। लंगड़े और अपाहिज चलने लग जाऐंगे और अल्लाह तआला के फ़रिश्ते उसके मज़ामीन को बरकत देंगे और यह इस ग़रज़ को पूरा करेगी जिस ग़रज़ के लिए यह प्रकाशित की जा रही है अल्लाह हुम्मा आमीन।

(उद्धृत दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवार उलूम भाग 20 पृष्ठ 507-508)

और अब तक जो लोग भी इस को पढ़ते हैं तो बाअज़ ग़ैर भी, ईसाई भी बड़ी तारीफ़ करते हैं अल्लामा नयाज़ फ़तह पूरी साहिब

जो कि मशहूर अहल-ए-क़लम हैं, मुहक़्क़िक़ हैं, अदीब थे। माहनामा निगार के मुदीर थे। अहमदी नहीं हैं। उन्होंने तफ़सीर-ए-कबीर का अध्यन किया तो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो को एक ख़त में लिखा कि "तफ़सीर-ए-कबीर भाग 3 आजकल मेरे सामने है और मैं उसे बड़ी निगाह्-ए-गोर से देख रहा हूँ। इस में संदेह नहीं कि क़ुरआन का अध्यन का एक बिल्कुल नया ज़ावीया फ़िक्र आपने पैदा किया है और यह तफ़सीर अपनी नौईयत के लिहाज़ से बिल्कुल पहली तफ़सीर है जिस में अक़्ल-ओ-नक़्ल को बड़े हुस्न से हम-आहंग दिखाया गया है। आपकी इलम का ज्ञान, आपकी दूरदर्शिता, आपकी ग़ैरमामूली फ़िक्र-ओ-फ़िरासत, आपका हुस्न-ए--इस्तदलाल उसके एक-एक शब्द से नुमायां है और मुझे अफ़सोस है कि मैं क्यों इस वक़्त तक बे-ख़बर रहा।" यह बड़े पढ़े लिखे और आलिम आदमी हैं जो बात कर रहे हैं। फिर फ़रमाते हैं कि "..कल सूरः हूद की तफ़सीर में हज़रत लूत पर आपके ख़्यालात मालूम कर के जी फड़क गया और बे-इख़्तयार यह ख़त लिखने पर मजबूर हो गया। هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ (हूद : 78) की तफ़सीर करते हुए आम मुफ़स्सेरीन से जुदा बेहस का जो पहलू इख़तेयार किया है इस की दाद देना मेरे इमकान में नहीं।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 8 पृष्ठ 157-158)

फिर एक दूसरे ख़त में लिखते हैं कि "रात को तो नियमिता उसे देखता हूँ मेरे नज़दीक यह उर्दू में बिल्कुल पहली तफ़सीर है जो बड़ी हद तक ज़हन-ए-इन्सानी को संतुष्ट कर सकती है।" फिर कहते हैं कि "इस तफ़सीर के ज़रीया से जो ख़िदमत इस्लाम की अंजाम दी है वह इतनी बुलंद है कि आपके मुख़ालिफ़ भी इस का इन्कार नहीं कर सकते। "وَذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 7 परिचय पृष्ठ)

फिर सेठ मुहम्मद आज़म साहिब हैदराबादी हैं। यह अहमदी थे। वर्णन करते हैं कि "बर्र-ए-सग़ीर हिंद और पाकिस्तान के प्रसिद्ध लोग नवाब बहादुर यार जंग (जिनसे सेठ साहिब के बड़े दोस्ताना ताल्लुक़ात थे) "यह बहादुर यार जंग साहिब अहमदी नहीं थे। उनके उनसे ताल्लुक़ात थे। "सेठ साहिब कहते हैं कि नवाब बहादुर यार जंग अपनी सोहबतों में तफ़सीर-ए-कबीर का अक्सर वर्णन किया करते थे और इस की अज़मत का हमेशा एतराफ़ करते और कहा करते थे कि इस के वर्णन करदा मआरिफ़ से उन्होंने बहुत लाभ प्राप्त किया है।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 8 पृष्ठ 158)

फिर जनाब अख़तर ओरेनवी साहिब एम.ए सदर विभाग उर्दू पटना यूनीवर्सिटी अपना वाक़िया वर्णन करते हैं। कहते हैं : "मैंने एक के बाद एक हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की तफ़सीर-ए-कबीर की चंद जिल्दें प्रोफ़ैसर अब्दुल मनान बेदल साबिक़ सदर विभाग फ़ारसी पटना कॉलेज पटना और वर्तमान प्रिंसिपल शबीना कॉलेज पटना की ख़िदमत में पेश कीं। और वे इन तफ़सीरों को पढ़ कर इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने मुदर्रिसा अरबिया शमसुल हुदा पटना के शेखों को भी तफ़सीर की कुछ जिल्दें पढ़ने के लिए दीं और एक दिन कई शयूख़ को बुलवा कर उन्होंने उनके ख़्यालात दरयाफ़त किए। एक शेख़ ने कहा कि फ़ारसी तफ़सीरों में ऐसी तफ़सीर नहीं मिलती। प्रोफ़ैसर अब्दुल मनान साहिब ने पूछा कि अरबी तफ़सीरों के मुताल्लिक़ क्या ख़्याल है? शयूख़ ख़ामोश रहे। कुछ देर के बाद उनमें से एक ने कहा। पटना में सारी अरबी तफ़सीरें मिलती नहीं हैं। मिस्र और शाम की सारी तफ़ासीर के अध्यन के बाद ही सही राय क़ायम की जा सकती है। प्रोफ़ैसर साहिब ने क़दीम अरबी तफ़सीरों का वर्णन शुरू किया और फ़रमाया मिर्ज़ा महमूद की तफ़सीर के पाया की एक तफ़सीर भी किसी ज़बान में नहीं मिलती। आप जदीद तफ़सीरें भी मिस्र और शाम से मंगवा लीजिए और चंद माह बाद मुझसे बातें कीजिए। अरबी और फ़ारसी के उल्मा जो बैठे हुए थे "भयभीत रह गए।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 8 पृष्ठ 158-159)

मुतअद्दिद कुतुब के लेखक और अख़बार सिदक़-ए-जदीद लखनऊ के ऐडीटर मौलाना दरिया आबादी

ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतेक़ाल पर लिखा कि "कराची से ख़बर शाय हुई है कि जमाअत अहमदिया (कादयानी) के इमाम मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद का 8 नवंबर को रबवाह में देहांत हो गया।" कहते हैं दूसरे अक़ीदे उनके जैसे भी हों क़ुरआन के उलूम-ए-क़ुरआन की विशव्यापी इशाअत और इस्लाम की आफ़ाक़-ओ-गीर तब्लीग़ में जो कोशिशें उन्होंने सरगर्मी और बुलंद आज़मी से अपनी तवील आयु में जारी रखी उनका प्रतिफल अल्लाह उन्हें अता फ़रमाए। और उन ख़िदमात के तुफ़ैल में उनके साथ आम मुआमला दरगुज़र फ़रमाए। इलमी हैसियत से क़ुरआन के हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ की जो तशरीह व्याख्या अनुवाद वह कर गए हैं इस का भी एक बुलंद-ओ-मुमताज़ स्थान है।"

(सिदक़ जदीद लखनऊ भाग 15 नंबर 51 18 नवंबर 1965 ई. बहवाला अलफ़ज़ल रबवाह 22/ मार्च 1966 ई. पृष्ठ : 8)

फिर एक मशहूर अहरारी लीडर थे मौलवी मज़हर अली साहिब अज़हर अपनी किताब "एक ख़ौफ़नाक साज़िश" में लिखते हैं कि "मौलवी (ज़फ़र अली ख़ां) ने .. कहा। अहमदियों की मुख़ालेफ़त की आड़ में अहरार ने ख़ूब हाथ रंगे। अहमदियों की मुख़ालिफ़त का अहरार ने महिज़ धन संग्रह के लिए ढोंग रचा रखा है।" पैसे इकट्ठे करने के लिए। कहते हैं "क़ादियानियत की आड़ में ग़रीब मुस्लमानों की गाढ़े पसीना की कमाई हड़प कर रहे हैं। कोई इन अहरार से पूछे भले-मांसो तुमने मुस्लमानों का क्या सँवारा। कौन सी इस्लामी ख़िदमत तुमने सरअंजाम दी है। क्या भूले से भी तुमने तब्लीग़-ए-इस्लाम की?" कहते हैं "अहरारियों !कान खोल कर।" ख़ुद भी अहरारी हैं कह रहे हैं "अहरारियों कान खोल कर सन लो तुम और तुम्हारे लगे बंधे मिर्ज़ा महमूद का मुक़ाबला क़ियामत तक नहीं कर सकते। मिर्ज़ा महमूद के पास क़ुरआन का इलम है तुम्हारे पास क्या ख़ाक धरा है। तुम में है कोई जो क़ुरआन के सादा हर्फ़ भी पढ़ सके? तुमने कभी ख़ाब में भी क़ुरआन नहीं पढ़ा। तुम ख़ुद कुछ नहीं जानते तुम लोगों को क्या बताओगे। मिर्ज़ा महमूद की मुख़ालिफ़त तुम्हारे फ़रिश्ते भी नहीं कर सकते। मिर्ज़ा महमूद के पास ऐसी जमात है जो तन-मन धन उस के एक इशारा पर उस के पांव में निछावर करने को तैयार है। तुम्हारे पास क्या है गालियां और बदज़बानी। तिरस्कार है तुम्हारे पर।" फिर लिखते हैं कि "..मिर्ज़ा महमूद के पास प्रचारक हैं।

मुख़्तलिफ़ उलूम के माहिर हैं। दुनिया के प्रत्येक मुल्क में उसने झंडा गाड़ रखा है मैं हक़ बात कहने से बाज़ नहीं रह सकता। यह मैं ज़रूर कहूँगा कि अगर तुमने मिर्ज़ा महमूद की मुख़ालिफ़त करनी है तो पहले क़ुरआन सीखो। प्रचारक तैयार करो। अरबी मुदर्रिसा जारी करो अगर मुख़ालेफ़त करनी है तो पहले प्रचारक तैयार करो। ग़ैर देशों में उनके मुक़ाबला में तब्लीग़-ए-इस्लाम करो यह क्या शराफ़त है कि .. मिरज़ाइयों को गालियां दिलवा दें क्या यह तब्लीग़-ए-इस्लाम है? यह तो इस्लाम की मिट्टी ख़राब करना है।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 6 पृष्ठ 513)

फिर अख़बार इमरोज़ लाहौर ने 30 मई 66 ई. की इशाअत में तफ़सीर सग़ीर पर तबसरा करते हुए लिखा कि "क़ुरआन हकीम पूरी बनीनौ इन्सान के लिए रुशद और हिदायत का स्रोत है। अज़ल से रहती दुनिया तक यह किताब मुबय्यन इन्सानों को देनी और दुनयवी मुआमलात में अदल का रास्ता दिखाती रहेगी और भोले भटको को सद मार्ग पर लाती रहेगी।" काश कि आज के उल्मा भी यह समझें। "क़ुरआन--ए-मजीद एक मुकम्मल ज़ाबित-ए-हयात है।" लिखता है "क़ुरआन-ए-करीम एक मुकम्मल ज़ाबता हयात है। ज़िंदगी का कोई शोबा, कोई सा गोशा और कोई सा मरहला ऐसा नहीं है जहां हम क़ुरआन से इस्तमदाद न कर सकते हूँ लेकिन ज़ाहिर है कि इस के लिए मतालिब-ए-क़ुरआन पर हावी होना लाज़िम है। जब तक क़ुरआन में मज़बूत अहकाम ख़ुदावंदी के मफ़ाहीम का इंशिराह ही न होगा रशद-ओ-हिदायत का सिलसिला कैसे शुरू होगा इसको समझना भी ज़रूरी है। फिर ही पता लगेगा कि क्या लिखा है। "इसी ज़रूरत के पेश-ए-नज़र क़ुरआन मुतालिब की तशरीह-ओ--तफ़सीर का सिलसिला शुरू हुआ और नुज़ूल-ए-क़ुरआन से लेकर अब तक और फिर अंत तक यह सिलसिला जारी-ओ-सारी रहेगा। जिन लोगों ने क़ुरआन फ़हमी आम करने के सिलसिला में कोई सा हिस्सा बटाया हो यक़ीनन तशक्कुर के सज़ावार हैं।' उनका शुक्रगुज़ार होना चाहिए। "मुफ़स्सिरीन ने अपने अपने दौर में क़ुरआन बसीरत को आम करने में जो काविशें कीं वह इस लिहाज़ से भी मुस्तहसिन क़रार पाएँगी कि इस तरह तफ़सीर क़ुरआन ने एक बाक़ायदा तहरीक की शक्ल इख़्तेयार कर ली और मुतालिब-ओ-मआनी के अबलाग़ के बाब में हिवाज़त की एक पुख़्ता रिवायत क़ायम हो गई। بحمداللہ। यह सिलसिला जारी है और रहेगा।" आगे फिर तफ़सीर-ए-सग़ीर के बारे में कहता है कि "इस वक़्त तफ़सीर-ए-सग़ीर पेश-ए-नज़र है। यह तफ़सीर अहमदिया जमात के पेशवा अल्हाज मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद मरहूम की काविश-ए-फ़िक्र का नतीजा है। क़ुरआन के अरबी मतन के उर्दू तर्जुमे के साथ कई मुक़ामात की तशरीह के लिए हाशिए और तफ़सीली नोट दीए गए हैं। तर्जुमे और हाशिए की ज़बान निहायत सादा और आसान फ़हम है।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 19 पृष्ठ 541-542)

फिर एक हफ़्तरोज़ा क़ंदील होता था। वह 19 जून 1966 ई. में लिखता है कि "अंजुमन हिमायत इस्लाम लाहौर और ताज कंपनी लिमीटेड की तरफ़ से कुरान-ए--हकीम की प्रकाशन में जो ख़ुश ज़ौक़ी का सबूत दिया जाता रहा है वह काबिल-ए--तहसीन है।" फिर कहता है तफ़सीर सग़ीर के बारे में कि "तफ़सीर सग़ीर की इशाअत से इस रूह आफ़रीन कोशिशों में इज़ाफ़ा हुआ है तफ़सीर-ए-सग़ीर में तर्जुमा और तफ़सीर इमाम जमाअत अहमदिया मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद की काविश का नतीजा है। अनुवाद और हाशिए की ज़बान आमफहम है ताकि प्रत्येक इलमी इस्ति-दाद का आदमी इस से मुस्तफ़ीद हो सके। अनुवाद और तफ़सीर में यह इल्तिज़ाम भी है कि जुमला तफ़ासीर मुतक़द्देमीन आख़िर तक पेश-ए-नज़र रखी गई हैं।" फिर कहता है कि "कुरान-ए-मजीद को इस ख़ूबसूरती से प्रकाशित के शाय करना एक बहुत बड़ी ख़िदमत-ए-इस्लाम है।"

(अल्फ़ज़ल 23 जून 1966 ई. पृष्ठ 5)

आजकल के उल्मा पाकिस्तान में यह कहते हैं कि इस में तहरीफ़ की गई है इसलिए बेन (ban) की जाती है। तफ़सीर-ए-सग़ीर पाकिस्तान में बेन (ban) की हुई है। इस को कोई अपने घर में भी नहीं रख सकता और उनके अपने जो हैं इंसाफ़ पसंद लोग, पुराने लोग वे कहते हैं कि इस जैसी कोई चीज़ ही नहीं। काबिल-ए--तारीफ़ चीज़ है और इस से आदमी बहुत कुछ सीख सकता है।

अल्लाह तआला आजकल के उल्मा को भी इन्साफ़ की नज़र से देखने की तौफ़ीक़ दे फिर अंग्रेज़ी तफ़सीर क़ुरआन के दीनी और अदबी मुहासिन ने यूरोप और अमरीका के चोटी के इल्म वालों को प्रभावित किया है। उन्होंने इस पर शानदार रिव्यू किए।

उदाहरणतः ए जे आरबरी (A J Arberry) एक मशहूर स्कॉलर हैं। कहते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ का यह नया तर्जुमा और तफ़सीर एक बहुत बड़ा कारनामा है। मौजूदा जल्द इस कारनामा की गोया पहली मंज़िल है।" जो उनको एक भाग पहुंचा था। कहते हैं "कोई पंद्रह साल का अरसा हुआ जमात अहमदिया कादियान के मु-हक़्क़िक़ उल्मा ने यह महान काम शुरू किया और काम हज़रत-ए-अक़दस मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद की हौसले और क़ियादत में होता रहा। काम बहुत बुलंद किस्म का था अर्थात यह कि क़ुरआन शरीफ़ के मतन की एक ऐसी ऐडीशन शाय की जाए जिसके साथ साथ उस का निहायत सही सही अंग्रेज़ी तर्जुमा हो और तर्जुमा के साथ आयत आयत की तफ़सीर हो।"फिर कहता है ".. शुरू में एक तवील दीबाचा है जो ख़ुद हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन ने रक़म की है" और फिर उसने दीबाचा की बातें लिखी हैं कि इस में क्या है। फिर कहता है कि "अगर हम इस काम को इस्लाम के ज़ौक़-ए-इलम तहक़ीक़ की अज़ीम यादगार कह कर पेश करें तो कोई मुबालग़ा न होगा। "ज़ौक़-ए-इलम तहक़ीक़ की अज़ीम यादगार कह कर पेश करें तो कोई मुबालग़ा नहीं होगा। "इस की तैयारी के प्रत्येक मरहला पर मुस्तनद कुतुब तफ़सीर व लुग़त और तारीख़ इत्यादि से इस्तेफ़ादा किया गया है। इन कुतुब की तवील फ़ह-रिस्त पढ़ने वाले को मुतास्सिर करती है। इस से मालूम होता है कि इस तर्जुमा और तफ़सीर के तैयार करने वालों ने न सिर्फ समस्त मशहूर अरबी तफ़सीरों को अध्यन में रखा है बल्कि उनके साथ साथ यूरोपीयन मुस्तश्रिक़ीन ने तन्क़ीदी रंग में जो कुछ लिखा है उसे भी मद्द-ए-नज़र रखा है। अगर सिर्फ अनुवाद पर नज़र डाली जाए तो कहना पड़ता है कि अनुवाद की अंग्रेज़ी, ग़लतियों से पाक और बड़ी पुर वक़ार है।" फिर कहता है कि "ग़ैर मुस्लिम मोतरेज़ीना के एतराज़ों का रद्द भी इस में है और दूसरे मज़ाहिब पर मुनासिब तन्क़ीद भी, ग़ैर मुस्लिम पढ़ने वालों को इस के कई हिस्से यकतरफ़ा और मोतरेज़ाना रंग लिए हुए मालूम होंगे लेकिन याद रहे यह हिस्से भी ख़ुलूस-ए-नीयत से लिखे गए हैं और निहायत तवज्जा से पढ़े जाने के लायक़ हैं। उनसे पता लगता है कि मुत्तक़ी और इल्म वाले मुस्लमान जब दूसरे मज़ाहिब की रिवायती तालीमों पर एतराज़ करते हैं तो ऐसा क्यों करते हैं।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 10 पृष्ठ 672-673)

फिर एक डाक्टर चार्ल्स ऐस ब्रैडन (Charles S. Braden) सदर विभाग ता-रीख़-ओ-अदब धार्मिक नॉर्थ वेस्टर्न यूनीवर्सिटी ईयूनस्टन (Evanston) अमरीका ने लिखा "किताब की तबाअत निहायत उम्दा है, टाइप भी आला है और सहूलत से पढ़ा जा सकता है। बहैसीयत मजमूई अंग्रेज़ी ज़बान के इस्लामी लिटरेचर में यह एक काबिल-ए-क़दर इज़ाफ़ा है जिसके लिए दुनिया जमाअत अहमदिया की अत्यधिक धन्यवादी है।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 10 पृष्ठ 674)

फिर एक मशहूर मसीही अख़बार अलंसर ने लिखा कि "जमात अहमदिया ने अमरीका और यूरोप के बर्र-ए-आज़मों में सक़ाफ़्त इस्लामीया की इशाअत का नुमायां काम किया है और यह काम लगातार मुबल्लग़ीन की रवानगी से हो रहा है और मुख़्तलेफ़ कुतुब-ओ-इश्तेहारात की इशाअत से भी जिनके ज़रीया फ़ज़ायल इस्लाम और हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सदाक़त को वर्णन किया जाता है। हमें क़ुरआन-ए-मजीद का अंग्रेज़ी में अनुवाद देखकर बहुत ही ख़ुशी हुई है। यह अनुवाद हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद इमाम जमात अहमदि-या की ज़ेर निगरानी किया गया है। तर्जुमा क़ुरआन-ए-मजीद जाज़िब-ए-नज़र और नाज़रीन के लिए قرۃالعُیون है। यह अनुवाद बुलंद पाया ख़्यालात का हामिल है क़ुरआन आयात एक कालम में दर्ज हैं और दूसरे कालम में बिलमुक़ाबिल उनका तर्जुमा कर दिया गया है। इसके बाद कुछ तफ़सीर की गई है। मुताला करने वाला नई तफ़ासीर में मुस्तश्रिक़ीन और यूरोपीयन दुश्मनों के एतराज़ात के मुफ़स्सिल जवाबात पाता है यह अमर काबिल-ए-ज़िक्र है कि इमाम जमात अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ने इस अनुवाद के साथ हज़रत रसूले करीम सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत भी तहरीर फ़रमाई है और यह सीरत-ओ-तर्जुमा बेनज़ीर हैं।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 9 पृष्ठ 675-676)

बहरहाल तफ़सीर-ए-कबीर, तफ़सीर सग़ीर और फाईव वालीयुम कमैंटरी (Five Volume Commentary) पर ये तबसरे हैं। अब मैं बाअज़ तक़ारीर के मुता-ल्लिक़ भी वर्णन करता हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के इलमी खज़ाने को जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने तक़ारीर इत्यादि में हमारे सामने रखा उस की ग़ैरों ने भी तारीफ़ की और उनको किस नज़र से देखा इस बारे में अर्ज़ करता हूँ कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु का एक ख़िताब "निज़ाम-ए-नौ' था जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़ैरों के सामने किया था। इस पर चर्चा करते हुए

"मिस्र के पसिद्ध लेखक और अध्यापक अब्बास महमूद अल् ईकाद ने इस अज़ी-

मुश्शान लैक्चर के अंग्रेज़ी तर्जुमा की इशाअत पर मिस्र के मशहूर अदबी मुजल्ला "अल् रिसाला" में हसब-ए-ज़ैल तबसरा किया।" कहते हैं कि "इस लैक्चर के मुताला से यह बात स्पष्ट है कि फ़ाज़िल लैक्चरार (हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद है) आलमगीर निज़ाम की तवज्जा इस तरफ़ फेरते हैं कि दरिद्रता और ग़ुर्बत की मुसीबत को दूर किया जाए या अन्य शब्दों के साथ जमे शूदा अम्वाल को समस्त दुनिया की क़ौमों और लोगों में भाग रसद तक़सीम किया जाए। निसन्देह आपने (लैक्चरार साहिब ने)"मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद ने "तमाम दुनिया के जुमला नए निज़ामों पर जिन्हों ने इस मुसीबत और मुश्किल को दूर और हल करने की कोशिश की है अर्थात फ़ैसी इज़म, नाज़ी इज़म और कम्यूनिज़म और अन्य दीगर जमहूरी निज़ाम और यह ज़ाहिर है कि आपको इन सब निज़ामों के मुताल्लिक़ प्रत्येक जिहत से मुकम्मल सूचना और इलम हासिल है।" यूंही नहीं लिख दिया। ये सारे जो नए इज़म हैं उनका आपको इलम भी था और बड़ा गहराई में इलम था। फिर साथ कहता है "लेकिन साथ ही आप यह एतिक़ाद भी रखते हैं जो बिल्कुल सही एतिक़ाद है कि सियास्तदान और पार्टी लीडर्ज़ और हुकूमतें इस मुश्किल को हल नहीं कर सकतीं इस लिए ऐसी मुश्किलात को हल करने के लिए रुहानी क़ुव्वत की ज़रूरत है क्योंकि प्रत्येक ऐसी मुश्किल जो समस्त इन्सानों से ताल्लुक़ रखती है इसका हक़ीक़ी हल और ईलाज समस्त के समस्त इन्सान मिलकर ही कर सकते हैं। इस लिए सबसे बड़ी चीज़ जो इतमेनान पैदा करती है और नेक कामों और इस्लाह के लिए दिलेरी पैदा करती है अर्थात एतेक़ाद और ईमान, उसको नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। इस के बाद आपने भारत में मौजूदा बड़े बड़े मज़ाहिब पर ख़ुसूसन और दुनिया के दूसरे मज़ाहिब पर उमूमन एक मुहक़्क़िक़ाना नज़र डाली हैता उनसे वे ईलाज दरयाफ़त किया जाए जो इस मुश्किल के दूर करने के लिए जिसे दुनिया बुरी नज़र से देखती है वह पेश करते हैं और ता उनसे नया निज़ाम दरयाफ़त किया जाए जो वह मौजूदा निज़ाम के बजाय पेश कर सकते हैं क्योंकि उनका भी फ़र्ज़ है कि वे इस मुश्किल को हल करें और इस मुसीबत को दूर करें।"

इस के बाद लिखता है कि "इस के बाद आपने बहुत से दलायल इस बात के लिए पेश किए हैं कि इन सब मज़ाहिब में से पहले तो यह है कि ठीक है मज़ाहिब अपने अपने निज़ाम पेश करें अगर उनके पास कुछ है लेकिन कर नहीं सकते। फिर लिखता है कि "आपने बहुत से दलायल इस बात के लिए पेश किए हैं कि इन सब मज़ाहिब में से सिर्फ इस्लाम ही एक ऐसा मज़हब है जो अपने अंदर इन मुश्किलात को हल करने की ताक़त रखता है और समस्त अक़्वाम और समस्त लोग पहले भी इस पर अमल कर सकते थे और अब इस मौजूदा ज़माना में भी अमल कर सकते हैं।"

फिर "(इस के बाद .. महमूद अल्उकाद "साहिब" ने "निज़ाम नो' के इस हिस्से का ख़ुलासा अपनी ज़बान में दिया है)" कहते हैं कि " ..

और दूसरे शब्दों में फ़ाज़िल लैक्चरार साहिब ने सिर्फ उन मज़हबी अक़ायद का ही जिनका हमने ऊपर वर्णित लाइनों में निहायत मुख़्तसर तौर पर ईशारतन वर्णन किया है मुक़ाबला और मुवाज़ना करने में ही कोई कसर उठा नहीं रखी।" उन्होंने लंबी चौड़ी तफ़सील दी थी जो मैं ने नहीं पढ़ी। बहरहाल कहते हैं "बल्कि आपने खासतौर पर उन पर गहिरी नज़र डाली है और ख़ास एहतेमाम से काम लिया है क्योंकि सिर्फ अक़ीदा ही जैसा कि आपने फ़रमाया कि एक ऐसी चीज़ है जिससे इस्लाह की उम्मीद रखी जा सकती है और साथ ही आपने इन अक़ाएद का मुक़ाबला और मुवाज़ना करने के इलावा इन समस्त सयासी और सोशल निज़ामों का भी मुक़ाबला और मुवाज़ना कर के यह साबित किया है कि यह सब के सब अमली तौर पर भी और रुहानी तौर पर भी अपने मक़ासिद में नाकाम रहे हैं।" (इस के बाद उसने "निज़ाम--ए-नौ' के इस हिस्सा का ख़ुलासा दिया है।) जो सयासी और सोशल निज़ामों पर मुश्तमिल है। फिर यह कहता है कि "..अगर यह आवाज़ यूरोप और अमरीका के अंग्रेज़ी ख़वान तबक़ा में फैलाई जाए बल्कि ख़ुद हिंदुस्तान वाले और पूर्व के लोग के दरमयान भी फैलाई जाये तो यक़ीनन अपना असर दिखलाएगी।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 9 पृष्ठ 369 – 370)

फिर इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़

यह आप रज़ियल्लाहु अन्हु का एक लैक्चर है जो मार्टिन हिस्टारीकल सोसाइटी (Martin Historical Society) के इजलास में इस्लामीया कॉलेज लाहौर में आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने दिया। ऐसा आलिमाना और तारीख़-ए-इस्लाम पर मुकम्मल उबूर रखते हुए यह लैक्चर था कि बड़े बड़े तारीख़दान भी आपके सामने अपने आपको स्कूल के बच्चे समझने लगे। हज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो की तहक़ीक़ का ख़ुलासा यह है। यहां ख़ुलासा वर्णन करता हूँ कि "साबित होता है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु और दीगर सहाबा प्रत्येक फ़िल्ला से या ऐब से पाक थे बल्कि उनका रवैय्या निहायत आला अख़लाक़ का मज़हर था और उनका क़दम नेकी के आला मुक़ाम पर क़ायम था। "किसी को हम इल्ज़ाम नहीं दे सकते, न हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को न सहाबा को। फिर फ़रमाया और यह कि "सहाबा को हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त पर कोई एतराज़ न था। वह आख़िरी दम तक वफ़ा-दारी से काम करते रहे।" और आपने यह साबित किया कि सहाबा पर यह ग़लत इल्ज़ाम है कि उन्होंने बग़ावत की। "हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो पर ख़ुफ़ीया रेशा दवानियों का इल्ज़ाम भी बिल्कुल ग़लत है। (यह भी इस में साबित किया।) अंसार पर जो इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से नाराज़ थे वह ग़लत है क्योंकि हम देखते हैं कि अंसार के सब सरदार उस फ़िल्ला के दूर करने में कोशां रहे हैं।" बहरहाल उस पर जो तास्सुरात हैं ग़ैरों के वे ये हैं।

सय्यद अब्दुल क़ादिर साहिब एम.ए प्रोफ़ैसर इस्लामिया कॉलेज लाहौर लिखते हैं कि "फ़ाज़िल बाप के फ़ाज़िल बेटे हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब का नाम-ए-नामी इस बात की काफ़ी ज़मानत है कि यह तक़रीर निहायत आलिमाना है "कहते हैं" मुझे भी इस्लामी तारीख़ से कुछ थोड़ा ज्ञान है और मैं दावा से कह सकता हूँ कि क्या मुस्लमान और क्या ग़ैर मुस्लमान बहुत थोड़े इतिहासकार हैं जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द के इख़तेलाफ़ात की तह तक पहुंच सके हैं और इस भयानक और पहली ख़ाना-जंगी की असली वजूहात को समझने में कामयाब हुए हैं। हज़रत मिर्ज़ा साहिब को न सिर्फ ख़ाना-जंगी के अस्बाब समझने में कामयाबी हुई है बल्कि उन्होंने निहायत वाज़ेह और मुसलसल पैराए में इन वाक़ियात को वर्णन फ़रमाया है जिनकी वजह से ऐवान ख़िलाफ़त मुद्दत तक तज़लज़ुल में रहा।

मेरा ख़्याल है कि ऐसा मुदल्लिल मज़मून इस्लामी तारीख़ से दिलचस्पी रखने वाले अहबाब की नज़र से पहले कभी नहीं गुज़रा होगा। सच्च तो ये है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के अह्द की जिस क़दर असली इस्लामी तारीख़ों का मुताला किया जाएगा उसी क़दर ये मज़मून सबक़ आमोज़ और काबिल-ए-क़दर मालूम होगा।"

(इस्लाम में इख़तेलाफ़ात का आग़ाज़ सफ़ा तमहीद, प्रकाशन नवंबर 1930 ई.)

फिर और भी बहुत से तबसरे हैं लेकिन वक़्त नहीं कि सबको वर्णन किया जाए। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु का एक ख़िताब इस्लाम के इक़तेसादी निज़ाम से मुताल्लिक़ था जो लाहौर में अहमदिया हॉस्टल में हुआ। "ये तक़रीर तक़रीबन अढ़ाई घंटे तक जारी रही। इस तक़रीर में अहमदी अहबाब के इलावा हज़ारों की संख्या में मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम सम्मानित लोग भी शामिल थे।' पढ़े लिखे लोग थे। ग़ैर अहमदी मुस्लमान और दूसरे ग़ैर मुस्लिम लोग भी "जिनकी अक्सरीयत आला दर्जा के तालीम याफ़ता वर्ग और पंजाब यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ैसर्ज़ और विद्यार्थियों से संबंधरखती थी। तक़रीर के दौरान प्रोफ़ैसर्ज़, वोकला और दीगर इल्म वाले दोस्त कसरत से नोटिस लेते रहे।"

(अनवारुल उलूम भाग 18 परिचय किताब "इस्लाम का इक़तेसादी निज़ाम" परिचय पृष्ठ : 1)

इस्लाम के इक़तेसादी निज़ाम का लुब्ब-ए-लुबाब वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "इस्लामी इक़तेसाद नाम है फ़र्दी आज़ादी और हुकूमती तदाख़ुल के एक मुनासिब इख़तेलाफ़ का।" आज़ादी भी हो और हुकूमत का दख़ल भी हो लेकिन यह आपस में मुनासिब तौर पर मिले हूँ, कवारडी नैट करते हूँ। "यानी इस्लाम दुनिया के सामने जो इक़तेसादी निज़ाम पेश करता है इस में एक हद तक हुकूमत की दख़ल अंदाज़ी भी रखी गई है और एक हद तक अफ़राद को भी आज़ादी दी गई है। इन दोनों के मुनासिब इख़तेलाफात का नाम इस्लामी इक़तेसाद है। फ़र्दी आज़ादी इस लिए रखी गई है ताकि अफ़राद आखेरत का सरमाया अपने लिए जमा कर लें और उनके अंदर आगे बढ़ने और मुक़ाबला की रूह करे। "सिर्फ दुनिया के मुक़ाबले में नहीं बल्कि आख़िरत के लिए भी जो नेकियां कर के आगे बढ़ने, नेकियों में बढ़ने का मुक़ाबला है वह भी जारी रहे। फिर फ़रमाया "और हुकूमत का तदाख़ुल इस लिए रखा गया है कि उमरा को यह मौक़ा न मिले कि वे अपने ग़रीब भाईयों को इक़तेसादी तौर पर तबाह कर दें। गोया जहां तक बनीनौ इन्सान को तबाही से महफ़ूज़ रखने का सवाल है हुकूमत की दख़ल अंदाज़ी ज़रूरी समझी गई है

और जहां तक आगे बढ़ने और उखरवी ज़िंदगी के लिए सामान जमा करने का सवाल है हुर्रियत-ए-शख़्सी को क़ायम रखा गया है और फ़र्दी आज़ादी को कुचलने की बजाय उसकी पूरी पूरी हिफ़ाज़त की गई है। अतः इस्लामी इक़तेसादीयात में फ़र्दी आज़ादी की भी पूरी हिफ़ाज़त की गई है ताकि इन्सान वे ख़िदमात के ज़रीया से आइन्दा की ज़िंदगी के लिए सामान बहम पहुंचा सके और तसाबिक की रूह तरक़्क़ी पा कर ज़हनी तरक़्क़ी के मैदान को हमेशा के लिए वसीअ करती चली जाए और हुकूमत का दख़ल भी क़ायम रखा गया है ताकि फ़र्द की कमज़ोरी की वजह से इक़-तेसादीयात की बुनियाद ज़ुलम, बे इंसाफ़ी पर क़ायम न हो जाए और बनीनौ इन्सान के किसी हिस्सा के रास्ता में रोका न जाए।"

(इस्लाम का इक़तेसादी निज़ाम, अनवारुल उलूम भाग 18 पृष्ठ 35)

"हुज़ूर ने अपनी तक़रीर के दूसरे हिस्से में कम्यूनिज़म की तहरीक का मज़हबी, इक़टेसादी, सयासी, नज़रियाती और अमली लिहाज़ से तफ़सीली जायज़ा लिया और आख़िर में इस के मुताल्लिक़ बाइबल की एक अज़ीमुश्शान भविष्यवाणी का उर्दू मतन सुनाने के इलावा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और अपनी भविष्यवाणी का भी वर्णन फ़रमाया।अल-ग़र्ज़ हज़रत मुस्लेह मौऊद के इस लैक्चर ने चोटी के इलमी तबक़ों में एक तहलका मचा दिया और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उसे प्रत्येक सतह पर ग़ैरमामूली कामयाबी हासिल हुई।"

(अनवारुल उलूम भाग 18 परिचए किताब "इस्लाम का इक़तेसादी निज़ाम" पृष्ठ 3)

" इस तक़रीर को हाज़िरीन ने ऐसे शौक़ से सुना कि इतने लंबे अरसा तक लोग इस तरह बैठे रहे कि गोया उनके सुरों पर परिंदे बैठे हैं।" अढ़ाई घंटे तक लगातार तक़रीर थी। "एक प्रोफ़ैसर तो इस तक़रीर को सुनकर रो पड़े और बाअज़ कम्यूनिज़म के हामी तलबा ने इस ख़्याल का इज़हार किया कि वे इस्लामी शोशलिज़्म के क़ायल हो गए हैं और अब उसे सही और दरुस्त तस्लीम करते हैं। यूनीवर्सिटी इकनॉमिक्स डिपार्टमैंट के एम.ए के बाअज़ विद्यार्थियों ने हुज़ूर की इस तक़रीर के मुताल्लिक़ यह ख़ाहिश ज़ाहिर की कि इस का अंग्रेज़ी अनुवाद छपवाकर यूनीवर्सिटी इकनॉमिक्स डिपार्टमैंट के प्रोफ़ैसरों के पास भेजा जाना चाहिए।" उस ज़माने में अंग्रेज़ों की हुकूमत थी अक्सर अंग्रेज़ प्रोफ़ैसर हुआ करते थे। "तथा उन्होंने यह भी कहा कि जहां मुख़्त-लिफ़ स्कीमें भारत की आइन्दा तरक़्क़ी और बहबूदी के लिए दूसरे लोगों की तरफ़ से पेश हो रही हैं वहां यह इस्लामी निज़ाम जो हुज़ूर ने पेश फ़रमाया है मुस्लमानों के ख़्यालात की नुमाइंदगी करेगा।"

(अनवारुल उलूम भाग 18 परिचय किताब "इस्लाम का इक़तेसादी निज़ाम" पृष्ठ : 2-3)

इस तक़रीर की सदारत मिस्टर रामचंद मचंदा साहिब ऐडवोकेट हाईकोर्ट लाहौर ने की थी। लिखने वाला ये लिखता है कि इस पुरशौकत तक़रीर के बाद सदर जलसा जनाब लाला रामचंद मचंदा साहिब ने एक मुख़्तसर तक़रीर की। कहते हैं कि "मैं अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ कि मुझे ऐसी क़ीमती तक़रीर सुनने का अवसर मिला और मुझे इस बात से ख़ुशी है कि तहरीक अहमदीयत तरक़्क़ी कर रही है और नुमायां तरक़्क़ी कर रही है। जो तक़रीर इस वक़्त आप लोगों ने सुनी है इस के अंदर निहायत क़ीमती और नई नई बातें हुज़ूर ने वर्णन फ़रमाई हैं। मुझे इस तक़रीर से बहुत फ़ायदा हुआ है और मैं समझता हूँ कि आप लोगों ने भी इन क़ीमती मालूमात से बहुत फ़ायदा उठाया होगा। मुझे इस बात से भी बहुत ख़ुशी हुई है कि इस जलसा में न सिर्फ मुस्लमान बल्कि ग़ैरमुस्लिम भी शामिल हुए हैं।"

फिर कहते हैं कि "पहले तो मैं समझता था और यह मेरी ग़लती थी कि इस्लाम सिर्फ अपने क़वानीन में मुस्लमानों का ही ख़्याल रखता है ग़ैर मुस्लिमों का कोई लिहाज़ नहीं रखता परंतु आज हज़रत इमाम जमात अहमदिया की तक़रीर से मालूम हुआ कि इस्लाम समस्त इन्सानों में बराबरी की तालीम देता है और मुझे यह सुनकर बहुत ख़ुशी हुई है। मैं ग़ैर मुस्लिम दोस्तों से कहूँगा कि इस किस्म के इस्लाम की इज़्ज़त-ओ-एहतराम करने में आप लोगों को क्या रोक है? आप लोगों ने जिस संजीदगी और सुकून से अढ़ाई घंटा तक हुज़ूर की तक़रीर सुनी है अगर कोई यूरो-पीयन इस बात को देखता तो वह हैरान होता कि हिंदुस्तान ने इतनी तरक़्क़ी कर ली है।"

फिर यह तबसरा लिखने वाले लिखते हैं कि "..तक़रीर सुनने के बाद अक्सर की ज़बान पर तारीफ़ी कलिमात थे बल्कि एक बड़े वर्ग ने इस बात का इक़रार किया कि अक़ाएद के मैदान में गो हम हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब के साथ इख़तेलाफ़ रखते हूँ।" अक़ीदा हमारा मुख़्तलिफ़ है। हम यह नहीं मानते जो यह अक़ीदा रखते हैं। अक़ीदे के इख़तेलाफ़ के बावजूद इस बात को तस्लीम कर रहे हैं। कहते हैं "मगर इस हक़ीक़त से हम इन्कार नहीं कर सकते कि आप मौजूदा ज़माना में हिंदुस्तान के बेहतरीन आलिम हैं और हक़ीक़त भी यही थी कि इलम-ए-इक़तेसाद के मुताल्लिक़ क़ुरआन के हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ का इन्किशाफ़ और यूरोप के इक-तेसादी फ़लसफ़ा का रद्द आज तक किसी इन्सान की तरफ़ से ऐसे रंग में पेश नहीं हुआ कि ख़ुद मुनकरीन-ए-इस्लाम ऐसे निज़ाम की फ़ज़ीलत का इक़रार करें और ख़ुद इश्तराकीयत के हामी इश्तराकीयत की ख़ामियाँ तस्लीम करने पर मजबूर हो गए हूँ। इसलिए हज़रत मौलाना शेर अली साहिब का वर्णन है कि उन्होंने तक़रीर के बाद बाअज़ ग़ैर अहमदी नौजवानों को आपस में यह गुफ़्तगु करते सुना कि अगर अब भी तुमने कमीयूनिसट की ताईद की तो तुम पर लानत है।" इसी तरह एक प्रोफ़ैसर साहिब पहले भी ज़िक्र आया पड़ा है यह सुनकर रो पड़े।

"...तक़रीर के इख़तेताम पर ग़ैर अहमदी प्रोफ़ैसर साहिबान और विद्यार्थियों की तरफ़ से इस ख़ाहिश का इज़हार किया गया कि चूँकि वक़्त की क़िल्लत की वजह से हुज़ूर अपनी तक़रीर में मज़मून के समस्त पहलूओं पर अपने ख़्यालात का इज़हार नहीं फ़र्मा सके इस लिए एक और तक़रीर फ़रमाई जाए जिसमें मज़मून के बाक़ी हिसस की वज़ाहत हो जाए ता लोग उलूम के इस चशमा से सेराब हो सकें जो अल्लाह तआला ने हुज़ूर को अता फ़रमाया है।"(तारीखे-ए-अहमदीयत भाग 9 पृष्ठ 495 से 497) कि उलूम-ए-ज़ाहिरी-ओ-बातिनी से पुर किया गया है।

सय्यद अब्दुल क़ादिर साहिब एम.ए वायस प्रिंसिपल इस्लामिया कॉलेज लाहौर यह सदर शोबा तारीख़-ए-इस्लामिया कॉलेज हैं। उन्होंने इस्लाम और इश्तराकीयत के विषय पर अख़बार सन राइज़ लाहौर में एक नोट दिया जिसका कुछ हिस्सा यह है। लिखते हैं कि "इस्लाम का इक़तेसादी निज़ाम और कम्यूनिज़म के मौज़ू पर (हज़रत) मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब इमाम जमात अहमदिया का लैक्चर सुनने का मुझे भी फ़ख़र हासिल हुआ। यह लैक्चर भी आपके दूसरे लैक्चरों की तरह जो मुझे सुनने का इत्तफ़ाक़ हुआ है आलिमाना ख़्यालात में रोशनी पैदा करने वाला और ज्ञान से परिपूर्ण मालूमात था। मिर्ज़ा साहिब ख़ुदादाद क़ाबिलीयत के मालिक हैं और इस मौज़ू के प्रत्येक पहलू पर आपको पूरा पूरा उबूर हासिल है।" कोई डिग्री नहीं ली हुई। कोई रिसर्च नहीं की हुई लेकिन अल्लाह तआला ने सिखाया है। "इस वजह से आपके ख़्यालात इस बात के मुस्तहिक़ हैं कि हम उनको क़दर की निगाह से देखते हुए उन पर तवज्जा करें।"

(तारीख़-ए-अहमदियत भाग 9 पृष्ठ 499)

फिर मुख़्तलिफ़ ज़बानों में इस के अनुवाद भी हुए। इस के अनुवाद पढ़ कर ग़ैर मुल्की प्रैस और पढ़े लिखे वर्ग ने भी सराहा। इसलिए

स्पेन के सुप्रीम ट्रीबीवनल के प्रैज़ीडैंट एस वाई डी जोस कास्टन (S.Y.D.Jose Castan) ने यह पढ़के मौलवी करम इलाही साहिब ज़फ़र को लिखा कि "मैं आपके नवाज़िश नामा का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ। इस के साथ एक बेहतरीन किताब है जिसके अध्यन ने मेरी तबीयत पर निहायत शानदार और आला तास्सुरात पैदा किए हैं। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि (अल्लाह ताला) आपको इस मुल्क स्पेन मे और इस के बाहर भारी कामयाबी अता करेगा। किताब हालात हाज़रा के मुताल्लिक़ निहायत दिलचस्प है।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 12 पृष्ठ 35)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात पर अख़बार रोशनी श्रीनगर ने 11 नवंबर 1965 ई. में लिखा कि "ऑल इंडिया कश्मीर कमेटी के अव्व-लीन सदर जनाब मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब की वफ़ात हसरत आयात।" कहते हैं कि "एक जय्यद आलम और मुफ़क्किर थे। तक़रीर करने में शायद ही कोई आपका सानी था। यहां तक कि "इस्लाम का इक़तेसादी निज़ाम" और "इस्लाम का निज़ाम-ए-नो" जैसे दक़ीक़ मौज़ूआत पर एक एक ही सोहबत में जो तक़ारीर हुईं वह किताबी सूरत में शाय हो कर मक़बूल आम हो चुकी हैं। आपके आलिम फ़ाज़िल होने का अंदाज़ा इस अमर से बख़ूबी लगाया जा सकता है कि इंटरनैशनल कोर्ट आफ़ जस्टिस" के जज जस्टिस "सर ज़फ़र उल्लाह ख़ान साहब भी आपके मुरीदों में से हैं और उन्ही के अलफ़ाज़ में आपकी ज़ात सिफ़ात हसना का एक ऐसा दिलकश मजमूआ पेश करती है जिसका एक शख़्स के वजूद में होना बहुत नादिर है ..ज़ाहिरी और बातिनी उलूम का सरचश्मा भी हैं।" अब ग़ैर यह तस्लीम कर रहे हैं कि ज़ाहिरी और बातिनी उलूम का सरचश्मा भी हैं। "आप तख़य्युल और अमल के मैदानों के यकसाँ शहसवार हैं। आपकी ज़िंदगी का बहुत सा हिस्सा ज़िक्र-ओ-फ़िक्र में गुज़रता

है लेकिन मैदान-ए-अमल में आप एक ज्ञानी और जरी क़ायद भी हैं।" फिर कहते हैं "..जनाब मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब का प्रत्येक कश्मीरी दिल से मद्दाह है क्योंकि

तहरीक हुर्रियत कश्मीर में आपका बहुत बड़ा हिस्सा है। 1931 ई. में जब तहरीक कश्मीर शुरू हुई तो आप ही ऑल इंडिया कश्मीर कमेटी के अव्वलीन सदर थे और यह आप ही की कोशिशों का समरा था कि तहरीक प्रवान चढ़ी और इस का प्रचार समस्त संसार में हुआ।"

(तारीख़-ए-अहमदीयत भाग 23 पृष्ठ 184-185)

फिर वेम्बले कानफ़रंस तो जमाअत की तारीख़ में काफ़ी मशहूर है। इस में आप रज़ियल्लाहु अन्हु का जो मज़मून पढ़ा गया इस में ग़ैरों के तास्सुरात क्या थे। मज़मून के ख़ातमे पर प्रैज़ीडैंट ने मुख़्तसर अलफ़ाज़ में रिमार्कस देते हुए कहा कि "मुझे ज़्यादा कहने की ज़रूरत नहीं। मज़मून की ख़ूबी और लताफ़त का अंदाज़ा ख़ुद मज़मून ने करा लिया है।" अब अंग्रेज़ हैं ये। "मैं सिर्फ अपनी तरफ़ से और हाज़रीन--ए-जलसा की तरफ़ से मज़मून की ख़ूबी तर्तीब, ख़ूबी ख़्यालात और आला दर्जा के तरीक़-ए-इस्तिदलाल के लिए हज़रत ख़लीफ़तुल -मसीह का शुक्रिया अदा करता हूँ। हाज़ेरीन के चेहरे ज़बान-ए-हाल से मेरे इस कहने के साथ मुत्तफ़िक़ हैं और मैं यक़ीन करता हूँ कि वह इक़रार करते हैं कि मैं उनकी तरफ़ से शुक्रिया करने में हक़ पर हूँ और उनकी तर्जुमानी का हक़ अदा कर रहा हूँ। फिर हज़रत साहिब की तरफ़ मुख़ातब हो कर अर्ज़ किया कि मैं आपको लैक्चर की कामयाबी पर मुबारकबाद करता हूँ आपका मज़मून बेहतरीन मज़मून था जो आज पढ़े गए।"

रिपोर्ट लिखने वाले लिखते हैं "एक साहिब हज़रत के हुज़ूर हाज़िर हुए और उन्होंने अर्ज़ किया कि मैंने हिंदुस्तान में तीस साल काम किया है और मुस्लमानों के हालात और दलायल का मुताला किया है। क्योंकि मैं एक मिशनरी की हैसियत से हिंदुस्तान में रहा हूँ परंतु जिस ख़ूबी, सफ़ाई और लताफ़त से आपने आज के मज़मून को पेश किया है मैं ने इस से पहले कभी किसी जगह भी नहीं सुना। मुझे इस मज़मून को सुन कर किया बलिहाज़ ख़्यालात, क्या बलिहाज़ तर्तीब और क्या बलिहाज़ दलायल बहुत गहरा असर हुआ है।"

(अल्फ़ज़ल 23 अक्तूबर 1924 भाग 12 नंबर 45 पृष्ठ : 4)

बहरहाल इस तरह के बेशुमार तास्सुरात हैं। मुख़्तलिफ़ मौज़ूआत पर आप रज़ियल्लाहु अन्हु के मज़ामीन और ख़ताबात की संख्या बेशुमार है जैसा कि मैं शुरू में बता चुका हूँ। चंद नमूने मैंने पेश किए हैं

अख़बार फते अल् दमिशक़ का एक हवाला पेश कर देता हूँ। 1924 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो जब यूरोप तशरीफ़ ले गए तो रास्ता में अरब देशों में भी क़ियाम फ़रमाया और इस दौरान अरब देशों के प्रैस ने भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में अपने तास्सुरात शाय किए। इसलिए अख़बार फ़ते अपनी दस अगस्त 1924 ई. की इशाअत में लिखता है "यह ख़लीफ़ा साहिब अपनी उम्र के चालीसवीं साल में हैं। मुँह पर स्याह कुशादा दाढ़ी रखते हैं। चेहरा गंदुम-गूं है और जलाल-ओ-वक़ार चेहरा पर ग़ालिब है। दोनों आँखें रोशन ज़हानत और ग़ैर-मामूली इलम-ओ-अक़्ल की ख़बर दे रही हैं। आप उनके चेहरा के स्वरूप में जबकि वह अपनी बर्फ़ की मानिंद सफ़ैद पगड़ी पहने खड़े हों यह दिमाग़ी क़ाबिलीयतें देखें तो आपको यक़ीन हो जाएगा कि आप एक ऐसे शख़्स के सामने हैं जो आपको क़बल इसके कि आप उसे समझें ख़ूब समझता है।" वह आप रज़ियल्लाहु अन्हु को देख लेता है अपनी नज़रों से "और आपके लबों पर तबस्सुम खेलता रहता है।' फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के मुताल्लिक़ फ़रमाया कि उनके लबों पर तबस्सुम खेलता रहता है " जो कभी ज़ाहिर और कभी पोशीदा हो जाता है" हमेशा मुस्कुराहट रहती है। फिर वह पढ़ने वालों के लिए कहता है कि "और अगर आप इस कैफ़ीयत को देखें तो आप इस तबस्सुम के नीचे जो अर्थ हैं और जो इस में जलाल होता है इस से हैरान हो जाऐंगे।"

(माहनामा ख़ालिद सय्यदना मुस्लेह मौऊद नंबर जून, जुलाई 2008 ई. पृष्ठ : 320)

इस तरह के ग़ैरों के बेशुमार तास्सुरात हैं उन लोगों के जिन्हें थोड़ा अरसा या ज़्यादा अरसा सोहबत में रहने का मौक़ा मिला। मवाद तो बहुत सा था जैसा कि मैंने कहा, मैं ने जमा करवाया था लेकिन वक़्त की वजह से मैं ने कुछ पेश किया है और वह भी ख़ुलासा पेश किया है। वे भी सारी बातें नहीं लिखें।

जो बातें भविष्यवाणी में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फ़रमाई थीं या कहना चाहिए कि अल्लाह तआला ने आप को बताई थीं वह हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु में पूरी हुईं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु को अल्लाह तआला ने जो इलम और इर्फ़ान अता फ़रमाया था उस का कोई बड़े से बड़ा आलिम भी मुक़ाबला नहीं कर सकता था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु का दिया हुआ लिटरेचर एक जमाती ख़ज़ाना है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़ताबात, खितबात, मज़ामीन अक्सर शाय हो चुके हैं कुछ हो रहे हैं। उन्हें पढ़ना चाहिए।

और अब अनुवाद का काम भी ख़ासी तेज़ी से हो रहा है। इं शा अल्लाह जल्द ही वह भी मुहय्या हो जाएगा। अंग्रेज़ी में तो काफ़ी काम हो चुका है और हो रहा है। मेरा मतलब है छोटी छोटी कुछ किताबें शाय हुई हैं।

अल्लाह तआला हमें इस इलम-ओ-इर्फ़ान से फ़ायदा उठाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार

"अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिन-स्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

के इमाम की बातों को सुनने की ज़रूरत है, उस के लिटरेचर को पढ़ने की ज़रूरत है फिर इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि ताल्लुक़ बिल्लाह का असल ज़रीया क़ुरआन-ए-करीम ही है

आप फ़रमाते हैं "याद रहे कि इन्सान उस ख़ुदा-ए परोक्ष को कदापि अपनी क़ुव्वत से शनाख़्त नहीं कर सकता जब तक वह ख़ुद अपने बारे में अपने निशानों से शनाख़्त न करावे और ख़ुदा तआला से सच्चा ताल्लुक़ कदापि पैदा नहीं हो सकता जब तक वह ताल्लुक़ ख़ास ख़ुदा तआला के ज़रीया से पैदा न हो और नफ़सानी इच्छाएं कदापि नफ़स में से निकल नहीं सकतीं जब तक ख़ुदाए क़ादिर की तरफ़ से एक रोशनी दिल में दाख़िल न हो और देखो कि मैं इस शहादत-ए-रवैय्यत को पेश करता हूँ कि वह ताल्लुक़ महज़ क़ुरआन-ए-करीम की पैरवी से हासिल होता है दूसरी किताबों में अब कोई ज़िंदगी नहीं और आसमान के नीचे केवल एक ही किताब है जो इस महबूब हक़ीक़ी का चेहरा दिखलाती है अर्थात क़ुरआन शरीफ़।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 2)

अतः क़ुरआन-ए-करीम के हुक्मों पर अमल करने से ख़ुदा तआला का चेहरा देखा जा सकता है

हम अहमदियों के लिए भी यह ग़ौर का मुक़ाम है। हम में कितने हैं जो क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर अमल करते हैं, ग़ौर से देखते हैं, पढ़ते हैं। इस के लिए हमें भरपूर कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ भी दे।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

हमारा और उन ईमानदारों का जो हमसे पहले गुज़र चुके हैं यह चश्मदीद वृत्तान्त और व्यक्तिगत अनुभव है कि पवित्र क़ुर्आन और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे अनुकरण में जो निष्कपटता और श्रद्धा से हो यह विशेषता है की धीरे-धीरे भागीदार रहित एक ख़ुदा का प्रेम दिल में बैठता जाता है और ख़ुदा के कलाम की रूहानी शक्ति मनुष्य की रूह को एक रोशनी प्रदान करती है जिस से उसकी आंख खुलती है और अन्ततः उसे दूसरे लोक (परलोक) के चमत्कार दिखाई देते हैं। तो उस दिन से उसको ज्ञान द्वारा विश्वास के तौर पर पता लगता है कि ख़ुदा है और फिर वह विश्वास उन्नति करता जाता है यहां तक कि ज्ञान द्वारा विश्वास से आंखों देखे विश्वास तक पहुँचता है और फिर आंखों देखे विश्वास से अटल विश्वास तक पहुँच जाता है। जो व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाता है उसे पहले कोई आत्म शुद्धि प्राप्त नहीं होती और कई प्रकार के गुनाह में ग्रस्त होता है फिर ख़ुदा की दया (रहमत) उसकी सहायता करती है और विलक्षण ढंगों से उसके ईमान को शक्ति दी जाती है, और जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में वादा है कि

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

यूनुस-65) अर्थात् ईमानदारों को ख़ुदा की ओर से ख़ुशख़बरियां मिलती रहती) हैं। ऐसा ही वह भी अपने बारे में कई प्रकार की ख़ुशख़बरियां पाता रहता है और जैसे-जैसे उन ख़ुशख़बरियों के द्वारा उसका ईमान पुख़्ता होता जाता है वैसे-वैसे वह गुनाह से बचता और नेकियों की ओर चलता है।

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 423-424)

इस्लाम की बरतरी पर एक मज़मून में जो आर्या समाज के जलसा में पढ़ा गया इस में क़ुरआन शरीफ़ की इमतेयाज़ी विशेषताओं

का वर्णन फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि "वह इतेयाज़ी निशान कि जो इल्हामी किताब की शनाख़्त के लिए अक़्ल-ए-सलीम ने क़रार दिया है वह सिर्फ़ ख़ुदा तआला की मुक़द्दस किताब क़ुरआन शरीफ़ में पाया जाता है और इस ज़माना में वह समस्त ख़ूबियां जो ख़ुदा की किताब में इमतेयाज़ी निशान के तौर पर होनी चाहिऐं दूसरी किताबों में पूर्णतः नहीं हैं मुम्किन है कि उनमें वह ख़ूबियां पहले ज़माना में होंगी मगर अब नहीं हैं और जबकि हम एक दलील से जो हम पहले लिख चुके हैं उनको इल्हामी किताबें समझते हैं परंतु वह गो इल्हामी हूँ लेकिन अपनी मौजूदा हालत के लिहाज़ से बिल्कुल व्यर्थ हैं और उस शाही क़िला की तरह हैं जो ख़ाली और वीरान पड़ा है और दौलत और फ़ौजी ताक़त सब इस में से कूच कर गईं हैं।"

फिर इमतेयाज़ी ख़ूबियों का मज़ीद वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अब मैं क़ुरआन शरीफ़ इमतेयाज़ी ख़ूबयां जो इन्सानों की ताक़त से बरतर हैं निम्नलिखित में वर्णन करता हूँ।" फ़रमाया "प्रथम यह कि इस में एक ज़बर-दस्त ताक़त है जो अपने पैरवी करने वालों को ज़न्नी मार्फ़त से यक़ीनी मार्फ़त तक पहुंचा देती है।"

केवल ज़न नहीं होता बल्कि यक़ीन होता है और यक़ीनी मार्फ़त पैदा हो जाती है। "और रूह यह कि जब एक इन्सान कामिल तौर पर इस की पैरवी करता है तो ख़ुदाई ताक़त के नमूने मोजिज़ा के रंग में उस को दिखाए जाते हैं और ख़ुदा उस से कलाम करता है और अपने कलाम के ज़रीया से ग़ैबी उमूर पर उस को सूचना देता है और मैं इन क़ुरआनी बरकात को क़िस्सा के तौर पर वर्णन नहीं करता बल्कि मैं वे मोजज़ात पेश करता हूँ कि जो मुझको ख़ुद दिखाए गए हैं। वे समस्त मोजज़ात एक लाख के क़रीब हैं बल्कि ग़ालिबन वे एक लाख से ज़्यादा हैं।

ख़ुदा ने क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया था कि जो शख़्स मेरे इस कलाम की पैरवी करे वह न केवल इस किताब के मोजज़ात पर ईमान लाएगा बल्कि उसको भी मोजज़ात दीए जाऐंगे। अतः मैंने बज़ात-ए-ख़ुद वह मोजज़ात ख़ुदा के कलाम की तासीर से पाए जो इन्सानों की ताक़त से बुलंद और महिज़ ख़ुदा का कार्य हैं। वे ज़लज़ले जो ज़मीन पर आए और वे ताऊन जो दुनिया को खा रही है वे उन्हीं मोजज़ात में से हैं जो मुझ को दिए गए।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 402 – 403)

फ़रमाया कि ये मोजज़ात मेरे नहीं बल्कि क़ुरआन शरीफ़ के हैं क्योंकि हम उसी की ताक़त और उसी की अता करदा रूह से यह काम कर रहे हैं। फ़रमाते हैं :

"उद्देश्य क़ुरआन शरीफ़ की ज़बरदस्त ताक़तों में से एक यह ताक़त है कि इस की पैरवी करने वाले को मोजज़ात और ख़वारिक़ दिए जाते हैं और वे इस कसरत से होते हैं कि दुनिया उनका मुक़ाबला नहीं कर सकती।

इसलिए मैं यही दावा रखता हूँ और बुलंद आवाज़ से कहता हूँ कि अगर दुनिया के समस्त मुख़ालिफ़ क्या पश्चिम के और क्या पूरब के एक मैदान में जमा हो जाएं और निशानों और ख़वारिक़ में मुझ से मुक़ाबला करना चाहें तो मैं ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से और तौफ़ीक़ से सब पर ग़ालिब रहूँगा और यह ग़लबा इस वजह से नहीं होगा कि मेरी रूह में कुछ ज़्यादा ताक़त है बल्कि इस वजह से होगा कि ख़ुदा ने चाहा है कि उस के कलाम क़ुरआन शरीफ़ की ज़बरदस्त ताक़त और उस के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रुहानी क़ुव्वत और आला मर्तबत का मैं सबूत दूं।

उसने महिज़ अपने फ़ज़ल से न मेरे किसी हुनर से मुझे यह तौफ़ीक़ दी है कि मैं उस के अज़ीमुश्शान नबी और उस के बड़ी ताकत कलाम की पैरवी करता हूँ और उस से मुहब्बत रखता हूँ और वह ख़ुदा का कलाम जिस का नाम क़ुरआन शरीफ़ है जो रब्बानी ताक़तों का मज़हर है मैं इस पर ईमान लाता हूँ।

और क़ुरआन शरीफ़ का यह वादा है कि لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا (यूनुस : 65) और यह वादा है कि اَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ (अल् मुजादला : 23) और यह वाअदा है कि يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا (अनफ़ाल : 30) इस वादा के मुवाफ़िक़ ख़ुदा ने ये सब मुझे इनायत किया है और अनुवाद इन आयात का यह है कि जो लोग क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान लाएँगे उनको मुबश्शिर ख़्वाबें और इलहाम दिए जाऐंगे अर्थात बकसरत दिए जाऐंगे अन्यथा कभी कभी के तौर पर किसी दूसरे को भी कोई सच्ची ख़ाब आ सकती है परंतु एक क़तरा को एक दरिया के साथ कुछ निसबत नहीं और एक पैसा को एक ख़ज़ाना से कुछ मुशाबहत नहीं और फिर फ़रमाया कि कामिल पैरवी करने वाले की रूहुल-क़ुदुस से ताईद की जाएगी अर्थात उनके फ़हम और अक़ल को ग़ैब से एक रोशनी मिलेगी और उनकी कशफ़ी हालत निहायत सफ़ा की जाएगी और उनके कलाम और काम में तासीर रखी जाएगी और उनके ईमान निहायत मज़बूत किए जाऐंगे और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा उनमें और उनके ग़ैर में एक फ़र्क़वर्णन का रख देगा अर्थात दूसरे के समक्ष उनके बारीक मआरिफ़ के जो उन को दिए जाऐंगे और समक्ष उनकी करामात और ख़वारिक़ के जो उनको अता होंगी दूसरी समस्त कौमें आजिज़ रहेंगी।" फ़रमाया "इसलिए हम देखते हैं कि क़दीम से ख़ुदा तआला का यह वादा पूरा होता चला आता है और इस ज़माना में हम ख़ुद उस के शाहिद और देखने वाले हैं।"

काश कुछ मुस्लमान भी इस को समझें और हमें भी इस का सही इदराक हासिल हो कि इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को निशानात के साथ भेजा है और उन निशानात का सिलसिला आज तक जारी है। और जो भी अल्लाह तआला के कलाम की सही तरह पैरवी करे अल्लाह तआला उस को भी कुछ न कुछ उस का मज़ा चखाता रहता है।

फिर फ़रमाया "यह तो हमने क़ुरआन शरीफ़ की इस ज़बरदस्त ताक़त का वर्णन कि है जो अपने पैरवी करने वालों पर-असर डालती है लेकिन वे दूसरे मोजज़ात से भी भरा हुआ है। उसने इस्लाम की तरक़्क़ी और शौकत और फ़तह की उस वक़्त

ख़बर दी थी जब कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का के जंगलों में अकेले फिरा करते थे और उनके साथ बजुज़ चंद ग़रीब और कमज़ोर मुस्लमानों के और कोई न था और जब केसर-ए-रुम ईरानियों की लड़ाई से मग़लूब हो गया और ईरान के किसरा ने इस के मुल्क का एक बड़ा हिस्सा दबा लिया तब भी क़ुरआन शरीफ़ ने बतौर पेशगोई के यह ख़बर दी कि नौ बरस के अंदर फिर क़ैसर रुम फ़तह-याब हो जाएगा और ईरान को शिकस्त देगा। इसलिए ऐसा ही ज़हूर में आया। ऐसा ही चंद्रमा और सूर्य ग्रहण का आलीशान मोजिज़ा जो ख़ुदाई हाथ को दिखला रहा है। क़ुरआन शरीफ़ में वर्णित है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उंगली के इशारा से चांद दो टुकड़े हो गया और कुफ़्फ़ार ने इस मोजिज़ा को देखा।"

(चशमा-ए-मार्फ़त, ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 409 से 411)

ये सब तफ़्सील आप की किताब चशमा मार्फ़त में मौजूद है। मुख़्तसर मैंने वर्णन कि हैं

फिर चशमा मार्फ़त में ही इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन के क़िस्से दरअसल भविष्यवाणियाँ हैं

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "जिस क़दर क़ुरआन शरीफ़ में क़िस्से हैं वे भी दरहक़ीक़त क़िस्से नहीं बल्कि वे भविष्यवाणियाँ हैं जो क़िस्सों के रंग में लिखी गई हैं। हाँ वह तौरेत में तो ज़रूर सिर्फ क़िस्से पाए जाते हैं परंतु क़ुरआन शरीफ़ ने प्रत्येक क़िस्सा को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए और इस्लाम के लिए एक भविष्यवाणी क़रार दे दिया है और यह क़िस्सों की भविष्यवाणियाँ भी कमाल सफ़ाई से पूरी हुई हैं। उद्देश्य क़ुरआन शरीफ़ मआरिफ़-ओ-हक़ायक़ का एक दरिया है और भविष्यवाणी का एक समुंद्र है और मुम्किन नहीं कि कोई इन्सान बजुज़ ज़रीया क़ुरआन शरीफ़ के पूरे तौर पर ख़ुदा तआला पर यक़ीन ला सके क्योंकि यह ख़ासीयत खासतौर पर क़ुरआन शरीफ़ में ही है कि इसकी कामिल पैरवी से वे पर्दे जो ख़ुदा में और इन्सान में हायल हैं सब दूर हो जाते हैं। प्रत्येक मज़हब वाला महिज़ क़िस्सा के तौर पर ख़ुदा का नाम लेता है परंतु क़ुरआन शरीफ़ इस महबूब-ए-हक़ीक़ी का चेहरा दिखला देता है और यक़ीन का नूर इन्सान के दिल में दाख़िल कर देता है और वह ख़ुदा जो समस्त दुनिया पर पोशीदा है वह महिज़ क़ुरआन शरीफ़ के ज़रीया से दिखाई देता है।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 271-272)

इस शर्त के साथ कि हक़ीक़ी तौर पर क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर अमल किया जाए

फिर आप फ़रमाते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम के दो हिस्से हैं। एक हिस्सा क़िस्से और दूसरा अहकाम। फ़रमाते हैं : "क़ुरआन-ए-करीम के दो हिस्से हैं। कोई बात क़िस्सा के रंग में होती है और कुछ अहकाम हिदायत के रंग में होते हैं ..जो लोग क़िसस और हिदायात में तमीज़ नहीं करते उनको बड़ी मुश्किलात का सामना करना पड़ता है और क़ुरआन-ए-करीम में इख़तेलाफ़ साबित करने के मूजिब होते हैं और गोया अपनी अमली सूरत में क़ुरआन-ए-करीम को हाथ से दे बैठे हैं क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ की निसबत तो ख़ुदा तआला का इरशाद है।

لَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا

(निसा -: 83) "कि अगर वह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो ज़रूर इस में बहुत इख़तेलाफ़ पाया जाता। फ़रमाते हैं कि "और अदम-ए-इख़-तेलाफ़ उस के मिंजानिबुल्लाह होने की दलील ठहराई गई है" कि इख़तेलाफ़ नहीं है इसलिए यह अल्लाह की तरफ़ से है।" लेकिन यह न-आक़िबत-अँदेश क़िसस और हिदायात में तमीज़ न करने की वजह से इख़तेलाफ़ पैदा कर के इस को مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللّٰهِ टाहराते हैं। अफ़सोस उनकी दानिश पर!!!"

(मल्-फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 83 ऐडीशन 1984 ई.)

जैसा कि वर्णन हुआ था क़िसस भविष्यवाणी के रंग रखते हैं और जो दूसरे अहकामात हैं। उनको अगर मिला के कुछ लोग समझने की कोशिश करते हैं तो वह ग़लतफ़हमी में पड़ जाते हैं। ख़ुद इर्फ़ान नहीं उनको समझने का और जो तफ़सीर की जाए इस पर तहरीफ़ का इल्ज़ाम लगा देते हैं

क़ुरआन-ए-करीम की तालीम की आला दर्जा की खूबियों का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं

"क़ुरआन शरीफ़ की आला दर्जा की ख़ूबियों में से इस की तालीम भी है क्योंकि वह इन्सानी फ़ितरत और इन्सानी मसाले के सरासर मुताबिक़ है। उदाहरणतः तौरेत की यह तालीम है कि दाँत के बदले दाँत और आँख के बदले आँख। और इंजील यह कहती है कि बदी का कदापि मुक़ाबला न कर बल्कि अगर कोई तेरी दाएं गाल पर तमांचा मारे तो दूसरी भी फेर दे परंतु क़ुरआन शरीफ़ कहता है कि جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللّٰهِ (अल् शूर : 41) अर्थात बदी का बदला तो उसी क़दर बदी है लेकिन जो शख़्स अपने क़सूरवार का गुनाह बख़्शे और इस गुनाह के बख़शने में वह शख़्स जिसने गुनाह किया है इस्लाह पज़ीर हो सके और आइन्दा अपनी बदी से बाज़ आ सके तो माफ़ करना बदला लेने से बेहतर होगा अन्यथा सज़ा देना बेहतर होगा। क्योंकि स्वभाव अलग अलग हैं। कुछ ऐसी ही हैं कि गुनाह माफ़ करने से फिर उस गुनाह का नाम नहीं लेते और बाज़ आ जाते हैं हाँ कुछ ऐसे भी हैं कि क़ैद से भी रिहाई पाकर फिर वही गुनाह करते हैं। अतः चूँकि इन्सानों की तबीयतें मुख़्तलिफ़ हैं इस लिए यही तालीम उनके मुनासिब हाल है जो क़ुरआन शरीफ़ ने पेश की है और इंजील और तौरेत की तालीम कदापि कामिल नहीं है बल्कि वह तालीम इन्सानी दरख़्त की शाख़ों में से सिर्फ एक शाख़ से ताल्लुक़ रखती है और वह दोनों तालीमें इस क़ानून के मुशाबेह हैं जो विशेष लोगों या विशेष स्थान हो परंतु क़ुरआन तालीम समस्त तबाइअ इंसानों का लिहाज़ रखती है।"

यह मिसाल मैंने पहले पिछले जुमे भी वर्णन की थी लेकिन और पहलू से की थी। अब क़ुरआन-ए-करीम के औसाफ़ के लिहाज़ से यह मिसाल पेश की जा रही है

फिर फ़रमाया कि "इंजील का हुक्म है। "इस हवाले से फिर एक और दूसरी मिसाल देते हैं। सिर्फ यही मिसाल नहीं है और मिसालें भी देते हैं उदाहरणतः फ़रमाया कि इंजील का एक हुक्म है" कि तू ग़ैर औरत को शहवत की नज़र से मत देख परंतु क़ुरआन शरीफ़ कहता है कि तो कदापि न देख।" औरतों को न देखो।" न शहवत की नज़र से न बे शहवत कि यह कभी न कभी तेरे लिए ठोकर का बाइस होगा।" यह कह देते हैं जी हम तो बड़ी पाक नज़र से देख रहे हैं। पाक नज़र से भी नहीं देखना क्योंकि तुम्हारे लिए ठोकर का बाइस होगा "बल्कि ज़रूरत के वक़्त ख़ाबीदा चशम से (न नज़र फाड़ कर) रफ़ा ज़रूरत करनी चाहिए।"यानी अगर ज़रूरत पड़े भी तो फिर आध खुली, नीम व आँखों से देखो ताकि पूरी तरह नज़र न आए। और अगर देखने की ज़रूरत है भी तो अपनी नज़रें फाड़ फाड़ कर न देखो। फिर फ़रमाया "और इंजील कहती है कि अपनी बीवी को व्यभिचार के अतिरिक्त कदापि तलाक़ न दे परंतु कुरान-ए-शरीफ़ इस बात की मस्लिहत देखता है कि तलाक़ सिर्फ़ व्यभिचार से विशेष नहीं बल्कि अगर मर्द और औरत में बाहम दुश्मनी पैदा हो जाए और मुवाफ़िक़त न रहे या उदाहरणतः जान का खतरा हो या अगरचे औरत व्यभिचारी नहीं मगर व्यभिचार के मुक़द्दमात उस पर लगते हैं और ग़ैर मर्दों को मिलती है तो उन समस्त सूरतों में ख़ावंद की राय पर निर्भरता होगी कि अगर वह मुनासिब देखे तो छोड़ दे। परंतु फिर भी ताकीद है और निहायत सख़्त है। "यह आराम से तलाक़ नहीं दे देना। फ़रमाया "ताकीद है और निहायत सख़्त ताकीद है कि तलाक़ देने में जल्दी न करे।" यहां इस बात का भी जवाब मिल गया कि मर्द को तलाक़ का पूर्णतः इख़तेयार है। बाअज़ मर्दों का यह ख़्याल है और वह इस्तिमाल कर जाते हैं और ज़्यादती भी करते हैं। फ़रमाया कि बग़ैर जायज़ वजह के एक तो वैसे ही जायज़ नहीं लेकिन इस में भी यही है कि कोशिश करो कि न दी जाए। फिर फ़रमाया "अब ज़ाहिर है कि कुरान-ए-शरीफ़ की तालीम इन्सानी हाजात के मुताबिक़ है और उनके तर्क करने से कभी न कभी कोई ख़राबी ज़रूर पेश आएगी। इसी वजह से कुछ यूरोप की गर्वनमैंटों को तलाक़ देने का क़ानून पास करना पड़ा।"

(चशमा-ए-मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 413-414)

अब क़ानून में भी यह लिखा जाता है कि वजह जवाज़ क्या है? काफ़ी मुक़द्दमों में वह पूछते हैं कि क्या वजह है? क्यों तलाक़ हो रही है? क्यों अलैहदगी हो रही है? सारे सबूत देने पड़ते हैं। तो बहरहाल फ़रमाया कि यह आसानी से नहीं हो जाती। इसलिए उन्हें भी अपना क़ानून बनाना पड़ा। दुनिया के क़ानून तो बहरहाल बनते भी हैं टूटते भी हैं। उनमें मज़ीद बेहतरी पैदा करने के लिए ये लोग कोशिश करते रहते हैं फिर भी कोई न कोई कमियाँ रह जाती हैं लेकिन ख़ुदा तआला का क़ानून ऐसा है जो ठीक स्वभाव के मुताबिक़ है। दुबारा यहां यह वाज़िह कर दूं सिर्फ मर्द को ही तलाक़ का हक़ नहीं है बल्कि औरत भी पसंद ना पसंद या किसी भी वजह से खुला ले सकती है

और अगर मर्द क़सूरवार ठहरे और बाअज़ ज़्यादतियां करे जो साबित हो जाएं तो फिर यह ख़्याल मर्दों का कि हक़ महर नहीं अदा होगा वह हक़ महर भी उनको अदा करना पड़ता है और हुक़ूक़ भी अदा करने पड़ते हैं। इसलिए किसी लड़की या औरत के ज़हन में यहां यह ख़्याल न आए कि सिर्फ मर्द को हक़ दिया गया है। जब औरत के हवाले से बात होगी तो वहां उस की तफ़सील भी वर्णन हो जाएगी

बहरहाल यह मज़मून जारी है। इस हवाले से और भी आप के इर्शादात हैं जो वक़तन फ़वक़तन वर्णन करता रहूँगा। अल्लाह तआला हमें क़ुरआन-ए-करीम की सही तालीम पर अमल करने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 23 March 2023 Issue No. 12

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

दरुस्सना क़ादियान (व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र)
Ahmadiyya Vocational (technical) training centre, Qadian में दाख़िला शुरू है, कला सीखने के इच्छुक युवा जल्दी करें

समस्त अहमदी नौजवानों की जानकारी के लिए घोषणा की जाती है कि विभाग व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र क़ादियान में दाख़िला शुरू हो गया है। विभाग में इलेक्ट्रीशियन,प्लंबिंग, वेल्डिंग/डीज़ल मिकैनिक Motor vehicle mechanic / AC & refrigerator और कम्पयूटर के एक वर्ष के कोर्स करवाए जाते हैं और सरकारी विभाग NSIC का certificate दिया जाता है। कला सीखने के इच्छुक युवाओं के लिए बेहतरीन अवसर है और जो युवा अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके इन कोर्सज़ में दाख़िला लेकर पूर्णता लाभ उठा सकते हैं। क़ादियान से बाहार के अहमदी नौजवानों के लिए जमाअत के प्रशासन के अधीन होस्टल और खाने की भी व्यवस्था है। होस्टल और खाने के खर्चों की कोई फ़ीस नहीं ली जाती है। इच्छुक युवा तुरंत निम्नलिखित नंबरों पर सम्पर्क करें।

फ़ोन नंबर : 9872923363, 9872725895, 8077546198

e-mail : darulsanaat. qadian @gmail. com

(प्रिंसिपल दरुस्सना क़ादियान)

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान 29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

की बुनियाद उसी पर है कि दुनिया में एक मुनज़्ज़म और न बदलने वाला क़ानून जारी रहे। अगर इन्सान को यह ख़्याल हो कि आलम में कोई निज़ाम नहीं, या यह कि निज़ाम बदलता रहता है तो वह कभी भी क़ानून-ए-क़ुदरत की बारीकियों के दरया-फ़्त करने की तरफ़ तवज्जा नहीं कर सकता।

तौहीद पर यक़ीन रखने का हुक्म देने के बाद माता पिता के साथ हुस्न-ए-सुलूक का हुक्म दिया है क्योंकि वह भी ख़ुदा तआला की तरफ़ ही तवज्जा दिलाते हैं। वह तिब्बी क़ानून का एक ऐसा ज़हूर हैं जो क़ानून-ए-शरीयत की तरफ़ ले जाता है। क्योंकि वह मुबदी (पैदा करने वाली ज़ात) पर दलालत करते हैं। माता पिता के ज़रीया से पैदाइश बताती है कि इन्सान संयोगवंश पैदा नहीं हो गया, इस से पहले कोई और था, और इस से पहले कोई और। उद्देश्य एक लंबा सिलसिला था, जिससे अल्लाह तआला के वजूद पर शहादत मिलती है

बग़ैर नस्ल वढ़ाने के उसूल के इन्सान का ज़हन स्रष्टा की तरफ़ जा ही नहीं सकता था। अगर यह निज़ाम न होता तो इन्सान को इस लंबी कड़ी की तरफ़ कभी तवज्जा ही न होती। लेकिन इस के साथ ही सिलसिला तनासुल यह भी बताता है कि इन्सानी पैदाइश का उद्देश्य और उसका मक़सद बहुत बड़ा है। अतः तौहीद के हुक्म के बाद माता पिता के विषय में एहसान का हुक्म दिया क्योंकि एक एहसान की क़दर दूसरे एहसान की क़दर की तरफ़ तवज्जा को फिराती है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 320 से 321 प्रकाशन कादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

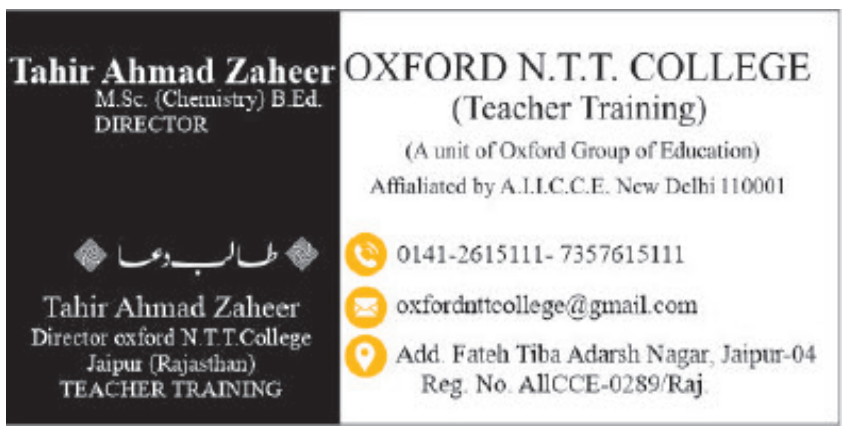

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad